चन्दामामा
जुलाई १९६७
75 P

Chandamama
Press
VADAPALANI
MADRAS 26
OFFERS YOU...
FINEST PRINTING.-
Equipped with
PHOTO GRAVURE
KLIMSCH CAMERA
VARIO KLISCHOGRAPH-
-BLOCK MAKING
and a
host of Others....

जुलाई १९६७

★

विषय - सूची

★

एक प्रति ०-७५ पैसे

वार्षिक चन्दा रु. ८-४० पैसे

यह कोई मामूली अपील नहीं है....

यह अत्यन्त क्रूर अकाल का दूसरा वर्ष है। इसके कारण लाखों की खुशहाली और ज़िन्दगी खतरे में है।

मैं हर व्यक्ति से अपील करती हूँ कि वह बड़े पैमाने पर, अकाल ग्रस्त क्षेत्रों की दुःखी जनता की मदद करें।

चेक अथवा चीज़ें या भेंट, "पी. एम. ड्राट रिलीफ फन्ड, प्राईम मिनिस्टर्स सेक्रेटेरियेट, नई दिल्ली-११" को भेजी जा सकती हैं।

इन्दिरा गान्धी
प्रधान मन्त्री

प्रधान मन्त्री के अकाल निवारण फन्ड के लिए भरसक मदद कीजिये

शक्ति और उत्साह के लिये!
दूध
कोको
शक्कर
माल्ट
Cadbury's
Bournvita
THE IDEAL FOOD DRINK FOR STRENGTH AND VIGOUR

दोस्तो चलो, फिर एक बार हम उस चिड़चिड़े बूढ़े के पास चलें।
चिड़चिड़े बूढ़े के पास? क्यों, वह तो सिर्फ़ हमें भागने को दौड़ेगा।
चलो न, चल कर ही देखा जाये—बेचारा कितना अकेला है।
आओ, खिड़की से झांक कर देखें कि वह क्या कर रहा है।
कितना अंधेरा है—दिलीप ज़रा अपनी टॉर्च की रोशनी यहाँ फेंको तो—न जाने क्या पैर से टकरा गया।
अरे....यह तो एक लॉकिट है ....शायद यह बूढ़े दादा का ही होगा ...उनसे पूछ कर ही देखा जाये।
शैतानो बार बार मना करने पर भी तुम लोग मुझे तंग करने से बाज़ नहीं आते!
बूढ़े दादा, हमलोग इसलिये आप के पास आये हैं कि...
भागो यहाँ से—मुझे काम करने दो।
दिलीप और उसके साथियों ने बूढ़े दादा की मदद की!
बूढ़े दादा क्या यह आपकी चीज़ है? हमें यह आपके पिछवाड़े पड़ी मिली है।
अरे, यह तो मेरा लॉकिट है।
...आओ बेटों आओ—नहीं जानता तुम्हें किस तरह धन्यवाद दूँ।
बूढ़े दादा यह आप क्या कह रहे हैं। हम आपके किसी काम आ सके यही हमारे लिये काफी है।
सचमुच यह धन्यवाद तो 'एवरेडी' को मिलनी चाहिये।
MC 3714

चन्दामामा

संचालक: चक्रपाणी

कहा जाता है, भगवान जब किसी को पैदा करते हैं, तो उसके लिए उसका भोजन भी तैयार रखते हैं, इस आशय की एक कहानी हम इस अंक में दे रहे हैं।

पर देखा यह जाता है कि कई भूख के कारण मर जाते हैं। खाद्य पदार्थ काफी हैं, पर वे उसे ही मिलते हैं, जो उनको पाने के लिए श्रम करते हैं।

वर्ष: १८ जुलाई १९६७ अंक: ११

भारत का इतिहास

अंग्रेज़ों के नौका दल ने फ्रेन्च नौकादल को पकड़ लिया। इस तरह जहाज़ों के पकड़े जाने के कारण, डूप्ले ने मोरिशस द्वीपों से आठ युद्ध पोत मँगवाये। न मालूम क्यों अंग्रेज़ों ने फ्रेन्च युद्ध पोतों से न युद्ध किया। वे मद्रास तक को फ्रेन्च लोगों के हाथ छोड़ बंगाल में हुगली की ओर चल दिये।

फ्रेन्च लोगों ने मद्रास को भू मार्ग से और जल मार्ग से घेर लिया। एक सप्ताह में मद्रास हार मान गया। इस घेरे में केवल छः की ही मृत्यु हुई।

पर इतने से युद्ध समाप्त न हुआ। तभी नियुक्त कर्नाटक के गवर्नर अनवरुद्दीन ने फ्रेन्चों के विरुद्ध बड़ी सेना भेजी। तब तक फ्रेन्च मद्रास में अपने पैर जमा चुके थे। उन्होंने नवाब की बड़ी सेना को हरा दिया, यद्यपि उनकी संख्या अधिक न थी।

नवाब की सेना वापिस लौट रही थी कि सेन्थोम के पास उस तरफ़ से आती हुई अतिरिक्त फ्रेन्च सेना ने फिर उनको शिकस्त दी। इन पराजयों का परिणाम क्या हुआ....इसके बारे में हम बाद में बतायेंगे।

इतने में एक बड़ा तुफान आया.... युद्ध पोतों की कुछ हानि हुई। वे मद्रास छोड़कर चले गये। डूप्ले ने दिन दहाड़े मद्रास को लूटा। फ्रेन्च नौकाबल के जाते ही समुद्र का तट फिर अंग्रेज़ों के अधिकार में आ गया। डूप्ले ने फोर्ट सेन्ट डेविड़ का अठ्ठारह महीने तक घेरा डाला, पर वह उसे जीत न सका। १७४८ जून में इन्ग्लेन्ड से एक नौका दल आया

६९. डूप्ले की कूटनीति

और उसने पोन्डीचेरी जल और स्थल मार्ग से घेर लिया। पर फ्रेन्च पराजित न हुए। इतने में यूरोप में युद्ध समाप्त हो गया। इन्ग्लेन्ड और फ्रान्स में समझौता हो गया। फ्रेन्च लोगों ने मद्रास फिर अंग्रेज़ों को सौंप दिया।

इस लड़ाई से डूप्ले ने एक सबक सीखा उसने एक नई चाल सोची....जब देशी रियासतों में कोई झगड़ा हो, तो उनमें से एक की मदद करना और दूसरे को हराना।

अनुवरुद्दीन की भेजी हुई उतनी बड़ी सेना एक छोटी पाश्चात्य सेना द्वार हरा दी गई थी। यानि साफ था कि युद्ध में संख्या की अपेक्षा, नियन्त्रण और आधुनिक शस्त्रों की अधिक आवश्यकता थी। चूँकि ऐशियाई इन दोनों में पिछुड़े हुये थे, इसलिए यूरूपियनों की छोटी मोटी टुकड़ियों के सामने भी नहीं टिक पाते थे। कुछ देशी रियासतों की सैनिक मदद करके, उन्हें जिताकर उनको संगठित करके, डूप्ले अंग्रेज़ों को दबाना चाहता था।

भाग्य ने भी डूप्ले का साथ दिया। उस समय दक्खन और कर्नाटक के

सिंहासनों के लिए खींचातानी चल रही थी। कर्नाटक का नवाब बनने की आकाँक्षा रखनेवाले चन्दा साहेब और निज़ाम बनने के इच्छुक मुजफ़र जंग से डूप्ले ने कूटनीतिक सम्बन्ध बनाये। (असफ़ जाह निज़ामुलमुल्क ने १७४८ में दकन की स्थापना की थी। उसके बाद उसका लड़का नासिर जंग नवाब बना। परन्तु आसफ़ जाह के पोते मुजफ़र जंग को, मुगल बादशाह ने दक्खिन का सूबेदार बनाया। इसी कारण मुजफ़र जंग दक्खन का सिंहासन हथियाना चाहता था)

३ अगस्त, १७४९ में अम्बूर के पास कर्नाटक की गद्दी के लिए युद्ध हुआ। उसमें अनवरुद्दीन मारा गया। उसका लड़का मोहम्मद अलि, तिरुचानापल्लि में जा मिला। तिरुचानापल्लि का घेरा डालने के लिए एक फ्रेन्च टुकड़ी गई।

डूप्ले की पैतरेंबाजी के सामने अंग्रेज़ कुछ न कर पाये। उन्होंने मोहम्मद अली की सहायता के लिए तिरुचनापल्ली कुछ सेना भेजी। डूप्ले की सहायता से मुजफ़र जंग ने दक्खन पर कब्जा कर लिया। कृष्णा के दक्षिण के भू भाग का उसने डूप्ले को गवर्नर नियुक्त किया। पोन्डीचेरी के आस पास का प्रान्त और ओड़ीसा के कुछ भाग भी उसने डूप्ले को सौंप दिये। सुप्रसिद्ध व्यापार का केन्द्र मछलीपट्टनं भी डूप्ले के हाथ आया। अपने कर्मचारियों में मुख्य कर्मचारी बुस्सी को कुछ फ्रेन्च सेना के साथ मुजफ़र जंग के यहाँ रखा। इस प्रकार निज़ाम के यहाँ भी फ्रेन्च लोगों का प्रभाव बढ़ने लगा। उनकी धाक बढ़ी।

डूप्ले की इस विजय पर उसके मित्रों और शत्रुओं को भी बड़ा आश्चर्य हुआ। तिरुचानापल्लि में छुपे हुए मोहम्मद अलि से अगर कुछ समझौता हो सका तो उसकी विजय और भी पक्की होती। जो सेना डूप्ले ने तिरुचनापल्ली को जीतने भेजी थी, उसने तन्जाऊर को पकड़ने में ही अपनी शक्ति व्यर्थ कर दी। इसलिए डूप्ले ने कूटनीति का सहारा लिया। परन्तु अंग्रेज़ मोहम्मद अलि की सहायता के लिए गये और उन्होंने उसे डूप्ले की जाल में नहीं फँसने दिया।
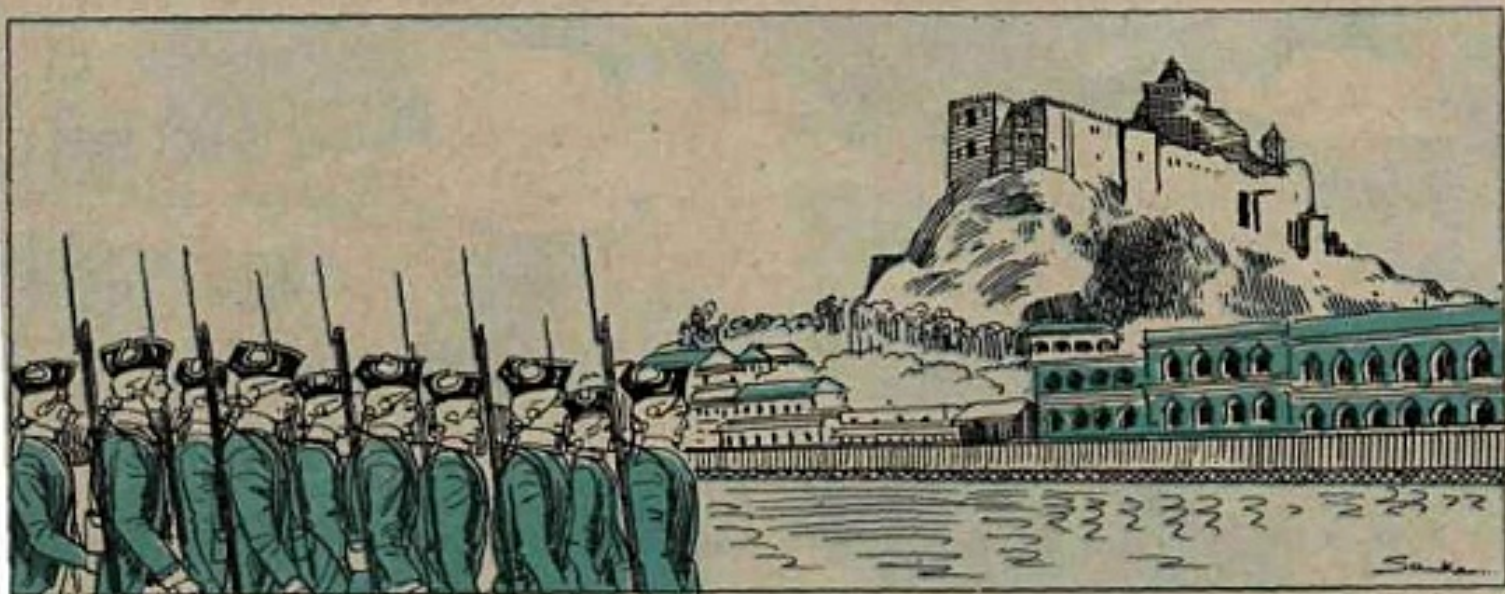
नेहरू की कथा

[३६]

१९४७ की गरमियों में देश में एक विस्फोट-सा हुआ। खून की नदियाँ बहीं। स्त्रियों का मानभंग हुआ। शिशु हत्यायें हुईं। अराजकता फैली। देश में पैशाचिकता व्याप्त हो गई।

मुख्य पार्टियों के पाकिस्तान के निर्माण के निश्चय को मानने के बाद, जून ३ को लार्ड माऊन्टबेटन ने देश के विभाजन की घोषणा की। सीमाओं के निर्धारण के लिए रेडक्लिफ कमिशन की नियुक्ति हुई। १५ अगस्त १९४७ को स्वतन्त्रता दिवस के रूप में घोषित किया गया।

भारत और पाकिस्तान अपने अपने स्वतन्त्रता दिवस मना रहे थे कि पाकिस्तान से लाखों हिन्दू और भारत से लाखों मुसलमान, घरबार, ज़मीन जायदाद सब खो खाकर, शरणर्थियों के रूप में दोनों देशों में आये। भारत देश में, इन शरणार्थियों की जिम्मेवारी जवाहर पर पड़ी। देश के विभाजन ने किसी को स्वतन्त्रता का आनन्द भी न उठाने दिया। बहुत-सी जिम्मेवारियाँ आ पड़ीं। पाकिस्तान की स्थापना से धार्मिक समस्या का हल होना तो दूर, वह और भी उलझ गई। इसके साथ काश्मीर की समस्या भी सिर पर आ पड़ी।
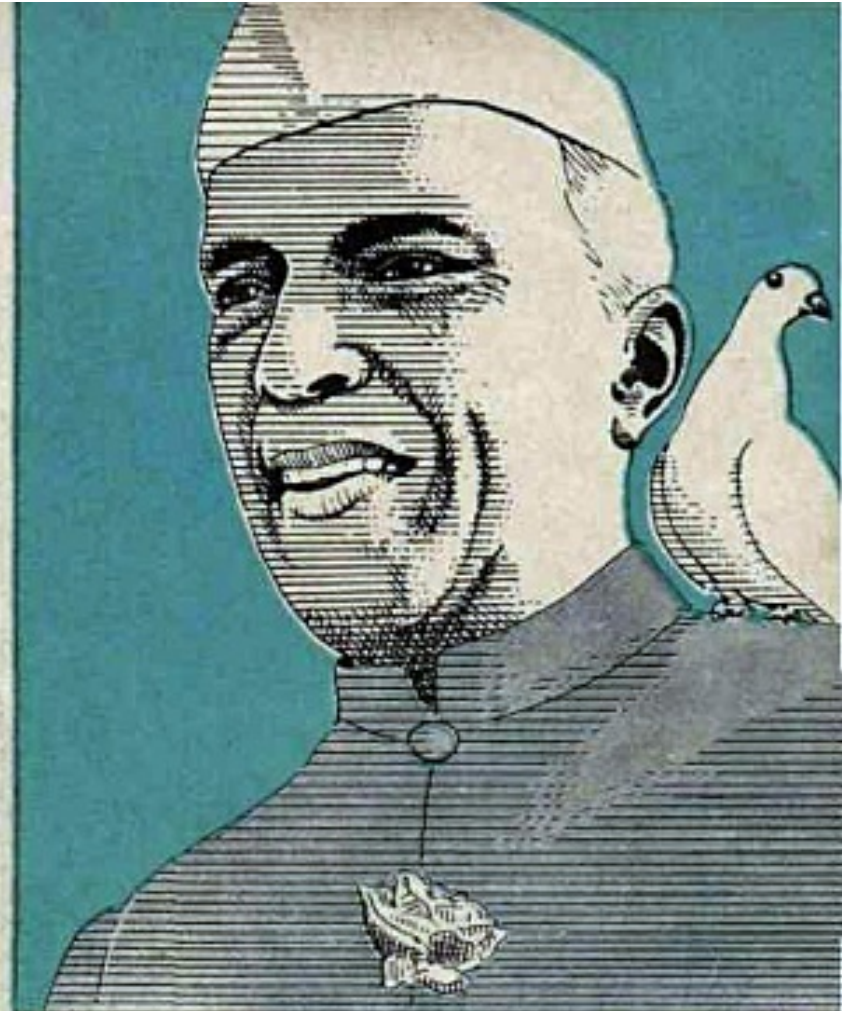
स्वतन्त्रता के मिलते ही, पाकिस्तान ने काश्मीर पर, पठान कबीलों से हमला करवाया। वहाँ हत्याकाण्ड प्रारम्भ किया। वह काश्मीर जिसे इस पृथ्वी पर स्वर्ग समझा जाता था, नरक हो गया। इन पठानों के पास पाकिस्तान के दिये गये
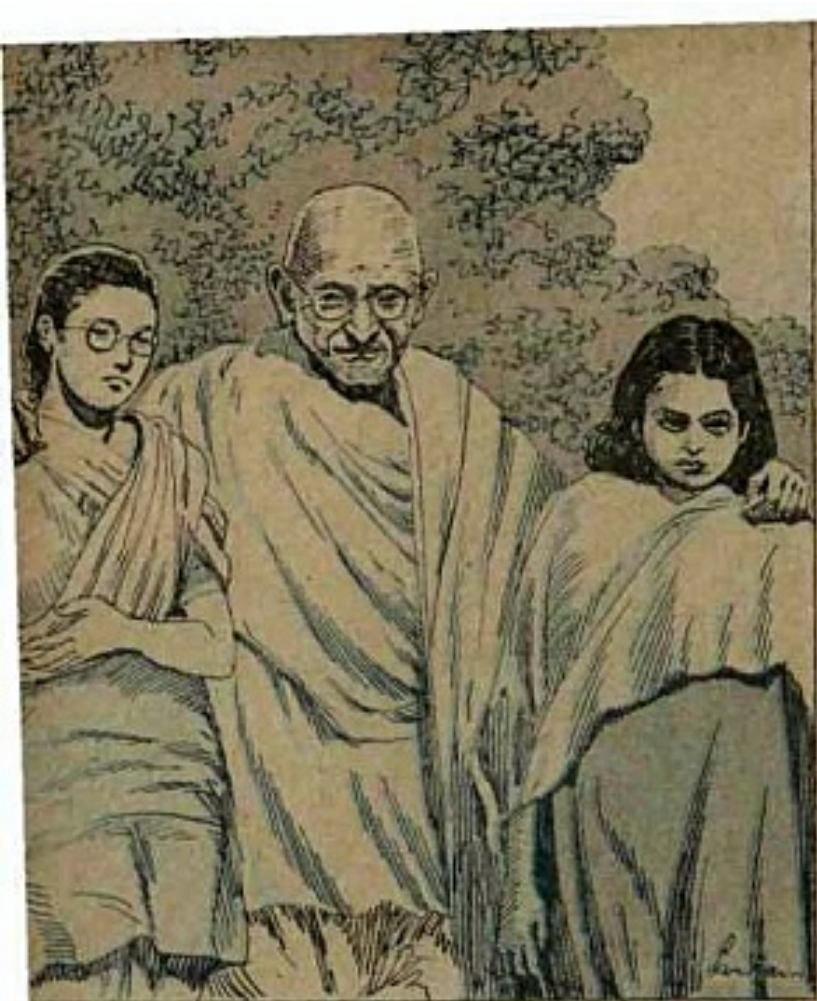
हथियार थे। ये श्रीनगर के पास बारामूला तक पहुँचे।

बारामूला में तीन हज़ार लोग मार दिये गये। काश्मीर घाटी के और भी कई शहर, इनके द्वारा लूटे गये। तब जाकर इनको रोकने के लिए भारतीय सेना भेजी गई।

जवाहर ने काश्मीर समस्या को संयुक्त राष्ट्र मंड़ल के सामने प्रस्तुत किया। अगर वे यह नहीं करते, तो भारतीय सेना इन पठानों को पीछे हठा देती। परन्तु संयुक्त राष्ट्र मंड़ल ने वह न्याय न दिया, जिसकी कि जवाहर ने आशा की थी। समस्या और उलझ गई और युद्ध भी बन्द न हुआ।

संयुक्त राष्ट्र मंड़ल के प्रतिनिधि आये। पाकिस्तान को मानना पड़ा कि काश्मीर के आक्रमण में उनका भी हाथ था। १ जनवरी १९४९ में युद्ध विराम हुआ।

३० जनवरी १९४८ में महात्मा गान्धी जी की हत्या हुई। न्यू दिल्ली में, गान्धी जी शाम को बिरला भवन में प्रार्थना के लिए जा रहे थे कि नाथूराम गोडसे ने उनको गोली से मार दिया। गान्धी जी अपने आदर्शों के लिए बलि हो गये। देश जिस प्रकार स्वतन्त्र हुआ था, उससे वे खास सन्तुष्ट न थे। उनके आदर्शों की भी बहुत कुछ क्षति हुई थी। दिल्ली में जब स्वतन्त्रता उत्सव मनाया जा रहा था, वे दिल्ली में तो थे नहीं, अपने देश में भी न थे। पूर्वी पाकिस्तान में थे।

गान्धी जी की हत्या सारे देश के लिए एक दारुण अनुभव था। जवाहर के लिए भी यह जबर्दस्त चोट थी। पर उन पर बहुत और बड़ी जिम्मेवारियाँ थीं। रियासतों का सम्मिलन, देश का औद्योगिक और

वैज्ञानिक पुरोगमन। संसार में भारत की प्रतिष्ठा की स्थापना, सब देशों के साथ स्नेहपूर्ण सम्बन्धों की स्थापना, अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्रों में भारत की परिगणना, इस प्रकार के कार्य जवाहरलाल ने बड़ी कुशलता से किये। उन्होंने बहुत से देशों का दौरा किया। बहुत आदर और प्रतिष्ठा पाई।

२६ जनवरी १९५० में भारत रिपब्लिक हुआ। जवाहर उसके प्रधान बने। संसार के राजनीतिज्ञों में उनका अग्रगण्य गिना जाना भारत के लिए गर्व का कारण था, उन्हीं के समय फ्रेन्च उपनिवेष और पोर्चुगीज़ उपनिवेष भारत में मिलाये गये।

स्वतन्त्र भारत के प्रथम प्रधान मन्त्री जवाहरलाल नेहरू की कथा हम इस के साथ समाप्त करते हैं। उनकी प्रशंसा में संसार के प्रसिद्ध पुरुष गमाल अब्दुल नासर, प्रेसिडेन्ट टिटो, लुड़विग एरहार्ड, भण्डार नायके, लार्ड एटली, लार्ड माउन्टबेटन, लार्ड पेथिक लारेन्स, लार्ड बाईडार, बेट्रन्ड रसेल, इलिया एहरेन्बर्ग आदि ने लेख लिखे।
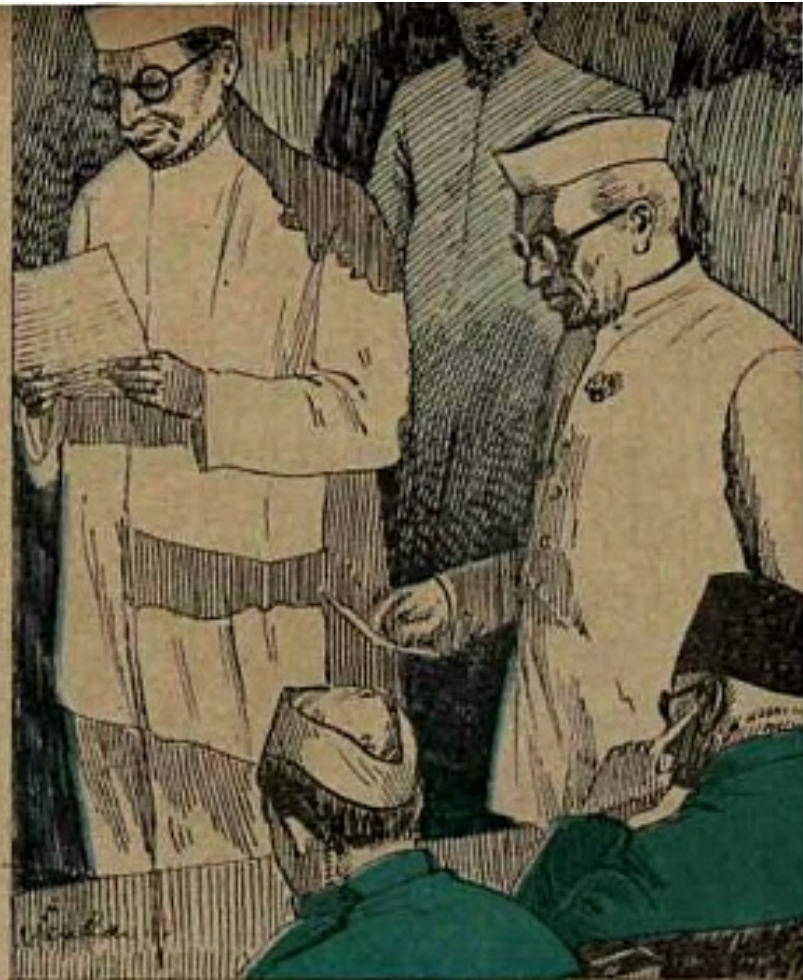
नेहरू के जीवन की कुछ घटनाओं को फिर एक बार सरसरी निगह से देख लें ?

१४ नवम्बर १८८९ अल्हाबाद में जन्म, पिता मोतीलाल, माता स्वरुप रानी।

१९१० केम्ब्रिज में शिक्षा का समाप्त।

१९१६ फरवरी कमला कौल से विवाह।

१९१७ नवम्बर १९ इन्दिरा का जन्म।

१९२० जलियाँवाला बाग का हत्याकाण्ड, परिणामस्वरूप गान्धी जी के आन्दोलन की ओर झुकाव। ५ सितम्बर को हुए कलकत्ता कोन्ग्रेस के अधिवेषन में प्रतिनिधि के रूप में भाग लेना।

६ दिसम्बर १९२१ प्रप्रथम गिरफ्तारी, कैद।

१९२२ मार्च ३ जेल से रिहाई। ११ मई में फिर गिरफ्तारी। अगस्त में रिहा, फिर गिरफ्तारी।

१९२६ मार्च में विदेश यात्रा, पत्नी और पुत्री के साथ। तभी सोवियेट रूस का पर्यटन।

१९२७ दिसम्बर में भारत वापिसी। मद्रास में कोन्ग्रेस अधिवेषन, कोन्ग्रेस को पूर्ण स्वतन्त्रता की ओर झुकाना।

१९२९ दिसम्बर २९ लाहौर कोन्ग्रेस अधिवेषन का अध्यक्षासन ग्रहण करना।

१९३० सत्याग्रह के सिलेसिले में गिरफ्तारी।

१९३१ मोतीलालजी की मृत्यु। दिसम्बर २६ को जवाहर की रिहाई।

१९३६ फरवरी २८ कमलाजी की मृत्यु। चुनाव में भाग लेने का कोन्ग्रेस द्वारा निश्चय। जवाहर का कोन्ग्रेस की तरफ़ से देश का दौरा (४५,००० मील) अधिक प्रान्तों में कोन्ग्रेस की विजय।

१९३८ जवाहरजी की माँ की मृत्यु।

१९३९ में, दूसरे विश्वयुद्ध का प्रारम्भ। मित्र राज्यों को यदि भारत की सहायता की आवश्यकता है, तो भारत को स्वतन्त्रता दी जाई, इसकी माँग।

१९४२ में भारत छोड़ो आन्दोलन। कोन्ग्रेस के नेताओं की गिरफ्तारी।

१९४५ ब्रिटेन और भारत देश के बीच बातचीत और समझौता।

१९४७ देश का विभाजन और भारत की स्वतन्त्रता।

पाताल दुर्ग

[१४]

[विरूप ने काले गरुड़ से बनमानस को नीचे गिरवाया। फिर सब तमेड़ों में बौने राक्षस के पास गये। यह पता लग गया कि राक्षस के पास जो स्त्री थी वह पुलिन्द की पत्नी न थी। राक्षस उनके उजड़े हुए मन्दिर में ले गया और वहाँ उसने खड्ड में पड़े मगरों और साँपों को दिखाया। बाद में—]

घूमक कुछ देर तक खड्ड में मगर और सर्पों को ध्यान से देखता रहा। उसे एक सन्देह हुआ। उजड़े हुए देवालय के पेड़ों पर लटके जानवरों की तरह ये भी कहीं महाकलि राक्षस के सेवक तो नहीं थे। यही नहीं, जैसा कि बौने राक्षस ने कहा है....पाताल दुर्ग तक पहुँचने के लिए यह ही एक मार्ग कैसे हो सकता है? वह तो कुछ यूँहि बातें करता-सा लगता है।

घूमक यूँ सोचकर, एक निश्चय पर आया। बौने राक्षस की ओर घूर घूरकर देखते हुए उसने कहा—"पाताल दुर्ग तक पहुँचने के लिए इस खड्ड के पशुओं में से ही जाना पड़ेगा....यह बात सत्य मालूम होती है, यह रास्ता तुम खूब जानते हो,

आये गये भी होंगे। इसलिए तुम आगे चलो और हम सब तुम्हारे पीछे चलेंगे।" कहकर भाला उठाकर वह बौने राक्षस के पीछे खड़ा हो गया ताकि वह पीछे न भाग खड़ा हो। सोमक ने उसके सिर का निशाना बनाकर बाण चढ़ाया।

बौने राक्षस ने धूमक और सोमक की ओर डर के कारण देखते हुए कहा—"तुम अपना वचन देकर मुकर रहे हो। तुमने कहा था कि तुम्हारी मुझ से कोई दुश्मनी नहीं है। अब तुम मुझ पर भाले बाण छोड़कर क्यों मुझे मारने की सोच रहे हो।"

"मेरे पति को न मारो। होने को यह जन्म से राक्षस है पर मनुष्यों में भी इससे अधिक कोई अच्छा और विश्वास पात्र नहीं मिलेगा।" कहती हुई राक्षस की जंगली पत्नी, धूमक और सोमक के सामने गिड़गिड़ाती रोने लगी।

"क्या तुम्हारे पति की अच्छाई यही है? हमने पाताल दुर्ग का मार्ग पूछा और वह हमें इन क्रूर जन्तुओं के बीच में से जाने के लिए कह रहा है। इसी कारण हम उसे पहिले उतरकर रास्ता दिखाने के लिए कह रहे हैं। धोखे का जवाब धोखा ही है।" धूमक ने भाले को बौने राक्षस के गले पर टिकाते हुए कहा।

बौने राक्षस ने आह भरते हुए कहा—"यह भाला सूई से भी तेज मालूम होता है, जोर से न घुसाओ। जो तुम-सी मानव स्त्री कह रही है, क्यों नहीं तुम उसका विश्वास करते? अगर मैं दुष्ट होता, तो मैं भी इस महाकलि राक्षस के पास होता, तुम जैसों को सताकर खाता। तुम सब पाताल दुर्ग का रास्ता ही न

जानना चाहते हो? मैंने पहिले ही बता दिया है कि तुम में से वहाँ से कोई भी जीता जी वापिस नहीं आ सकता। सब का अपना अपना मुकद्दर है....मैं क्या कर सकता हूँ!" कहते हुए खड्ड की दीवार पर किरकिर करती एक बेल ढूँढ़ी और उसे ऊपर खींचा।

"महाकलि राक्षस के कुछ मुख्य सेवकों को ही यह रहस्य मालूम है। इस बेल के सहारे खड्ड में उतरो और वह जो पत्थर, बाहर दिखाई दे रहा है, वहाँ तक जाओ। अगर उस पत्थर को तुमने जोर से दबाया, तो एक बड़ी-सी पत्थर की तख्ती दिखाई देगी। उस पर तुम आराम से उतर सकते हो। जहाँ वह तख्ती खतम होती है, वहाँ से एक सुरंग निकलती है। अगर तुम उस सुरंग से गये, तो उस दण्डकारण्य में पहुँचोगे, जहाँ उस राक्षस का साम्राज्य है। उतनी दूर जाने के बाद उसके पाताल दुर्ग के बारे में मालूम कर लेना कोई बड़ी बात नहीं है। तुम में से कौन पहिले इस टहनी को पकड़कर खड्ड में उतरता है? धूमक को सन्देह हुआ कि इसमें अवश्य कोई चाल है। राक्षस के कहे अनुसार दीवार के सुरंग के मार्ग पर मानों चले भी गये, तो कैसे मालूम हो कि वह हमें दण्डकारण्य ले जायेगा। यही नहीं, यदि यह बेल इस बीच टूट गई, तो उसे पकड़कर जो खड्ड में उतर रहा होगा, वह मगरों के मुख में जा गिरेगा।

धूमक राक्षस के हाथ में पकड़े टहनी को देखकर कुछ कहने को ही था कि पुलिन्द जोर से चिल्लाया। "धूमक बाबू इस राक्षस की बात का विश्वास न कीजिये। यह धोखेबाज है। इस स्त्री को

तुम अपनी नावों को भी ले जाओ। इसमें सन्देह नहीं है कि तुम्हारी पत्नी पाताल दुर्ग में महाकलि की कैद में है। राजकुमारी के साथ उसे भी हम अवश्य छुड़ाकर लायेंगे।"

धूमक के यह कहते ही पुलिन्द बड़ा खुश हुआ। उसने कहा—"धूमक बाबू! आपने बड़ी अच्छी बात कही है। जो गई सो गई। बाकी जो नौ पत्नियाँ हैं, उनकी भी तो देखभाल करनी होगी। अब मैं अपने गाँव चला जाऊँगा। अगर कभी मेरी मदद की जरूरत हो, तो मेरे पास खबर भिजवाइये। पाताल दुर्ग पहुँचकर कहीं मेरी पत्नी के बारे में भूल न जाइयेगा।" वह खड्ड से नदी की ओर चल दिया।

धूमक ने यूँ लम्बी साँस ली, जैसे सिर से कोई बड़ा बोझ उतर गया हो। बौना राक्षस बिना कुछ कहे बेल पकड़कर खन्दक में जा घुसा और उसकी दीवार से बाहर निकले पत्थर पर उसने जोर से पैर मारा। तुरत एक बड़ी पत्थर की तख्ती बाहर निकली। राक्षस उस पर खड़ा हो गया और उसने धूमक से कहा—"देख

देखने से मुझे इसमें मेरी दसवीं पत्नी का नाक नक्शा दिखाई दे रहा है।" पुलिन्द का बात बात पर अपनी पत्नी का हवाला देना धूमक को शुरु से ही बुरा लग रहा था। हम यहाँ जिन्दगी और मौत के बीच में लड़खड़ा रहे हैं और इसे अपनी जवान पत्नी के सिवाय और कुछ नहीं सूझ रहा है।

धूमक ने पुलिन्द को समझाते हुए कहा—"पुलिन्द जो मदद तुमने अब तक की है, हम उसके लिए कृतज्ञ हैं। अब तुम अपने गाँव वापिस जा सकते हो।

लिया न इसमें कोई धोखा नहीं है। नीचे के विष जन्तु इतनी ऊपर नहीं आ सकते। अब तुम सब बेल पकड़कर उतर आओ।" तब तक धूमक के कुछ सन्देहों का निवारण हो गया था। उसके कहते ही सब के सब एक एक करके पत्थर की तख्ती पर जा उतरे। वहाँ खड़े होकर उन्होंने दीवार के नीचे सीढ़ियाँ देखीं और उसमें से सुरंग।

"इस सुरंग से एक घंटा चलकर तुम दण्डकारण्य पहुँच सकते हो। यदि पहाड़ों के रास्ते जाते तो चार पाँच महीने लगते। रास्ते में तुम्हें बहुत से कष्ट तो झेलने ही होंगे, रास्ता भटककर फिर वहीं पहुँच सकते हैं जहाँ से निकले थे, ऐसी भी सम्भावना है, सम्भलकर जाओ।" बौने राक्षस ने कहा।

धूमक ने सोमक और विरूप की ओर देखा। वे दोनों सुरंग में जाने के लिए तैयार खड़े थे। धूमक ने बौने राक्षस के प्रति अपनी कृतज्ञता दिखाई। "राक्षसों में भी अच्छे लोग होते हैं, इसका तुम्हें देखने के बाद विश्वास हो रहा है। क्या तुम कुम्भीर को जानते हो? वह ही

हमारी राजकुमारी कान्तिसेना को उठा ले गया है।" धूमक ने कहा।

"मैं भला उसे क्यों नहीं जानता? एक मान्त्रिक ने उसके सिर का सींग तोड़ दिया था। उन दोनों में भयंकर भिड़न्त हुई। वह मान्त्रिक दण्डकारण्य में ही रहता है। महाकलि की और उसकी बड़ी पक्की दुश्मनी है। कभी न कभी वे एक दूसरे को मारकर रहेंगे।" बौने राक्षस ने कहा।

इतने में खड्ड के ऊपर से राक्षस की पत्नी चिलाई। "क्या तुम भी उनके साथ अपने गाँव जाना चाहते हो? ऊपर क्यों नहीं आते? वह लाल पीली हो रही थी।"

"यह चुड़ैल कभी न कभी मेरी जान लेगी।" राक्षस ने कहा। फिर उसने धूमक का हाथ पकड़कर कहा—"मेरे बारे में दण्डकारण्य में किसी राक्षस को न बताइये।" कहकर वह बेल पकड़कर दीवार के ऊपर चला गया।

विरूप और सोमक तख्ती पर से सुरंग की सीढ़ियों की ओर जा रहे थे कि धूमक ने उनको रोका। "हमें इस सुरंग में करीब एक घंटा जाना पड़ेगा। वह बिना प्रकाश के कैसे सम्भव है? अगर राक्षस सेवक पाताल दुर्ग जाने के लिए इस रास्ते का उपयोग करते हैं, तो उनके द्वारा इस्तेमाल की जानेवाली मशालें यहीं कहीं होंगी। पहिले उनको खोजो।"

सोमक सुरंग में गया। दो तीन मिनट बाद, वह दो तीन मशालें ले आया। उन्हें जलाने के लिए चकमक पत्थर और सूई लेकर धूमक के पास आया। धूमक और विरूप पत्थर की तख्ती से, सुरंग में उतरे। तुरत तख्ती अपनी जगह फिर जा लगी। सुरंग बन्द हो गई।

एक दो मिनट बाद, तीनों मशालें जलाकर सुरंग के रास्ते निकल पड़े। अच्छा रास्ता था। चौड़ा था। भटकने की गुंजाईश न थी। पर उसमें से छोटे छोटे रास्ते इधर उधर जा रहे थे। जब उनको देखने विरूप गये, तो उसको वहाँ दो तीन मनुष्यों के अस्थिपंजर दिखाई दिये। विरूप ने अनुमान किया कि इन आदमियों ने राक्षसों के चुंगल से निकलकर भागने की कोशिश की होगी और यहाँ फँस फँसाकर मर मरा गये होंगे।"

बिना किसी घटना के आध घंटे तक धूमक और उसके साथी उस सुरंग में बहुत दूर चलते गये। ज़ब वे एक मोड़ पर मुड़े, तो दूरी पर उनको कुछ मशालें दिखाई दीं। धूमक झट पीछे की ओर मुड़ा। अपने हाथ की मशाल उसने ज़मीन पर दे पटकी। उसे बुझा दी। सोमक और विरूप को भी बुझाने के लिए कहा। फिर तीनों बड़ी सुरंग छोड़कर बाजू की एक छोटी गली में छुप गये।

धीमे धीमे वे मशालें वहाँ आईं जहाँ धूमक आदि थे। मशाल लिए करीब बीस आदमी होंगे। सबके आगे एक राक्षस चल रहा था। उसके बाद नंग धड़ंग सूखे भूखे मनुष्य थे, जो शायद उनकी सेवा में थे। उन सब के पीछे एक और राक्षस था। आगे का राक्षस ऊँची आवाज में कोई गाना गा रहा था। वे धूमक की जगह के पास आये और आगे देखते निकल गये। सबके चले जाने के बाद पीछे के राक्षस ने नथने फुलाते हुए जोर से कहा—"कहीं मशालों के धुंये की गन्ध आ रही है।" यह सबने सुना भी।

आगे चलते हुए राक्षस ने खिझकर कहा—"अरे कितनी ही तरह की

धुँये की गन्ध है। हमारी मशालों से क्या कोई साम्राणी की गन्ध आती है? तुम्हारी अक्लमन्दी भी खूब है। जल्दी चलो।"

पीछे आता राक्षस फिर कुछ न बोला। वह दूसरों की पीछे चलता गया। धूमक और उसके दोनों साथियों ने सोचा कि अच्छी आफ़त टल गई थी, जब मशालवाले राक्षस आँखों से ओझल हो गये, तो धूमक और उसके साथी छुपी हुई जगह से बाहर आये। फिर अपनी मशालें जलाकर वे सावधानी से आगे बढ़ते गये।

पन्द्रह बीस मिनट हो गये, सुरंग में अब पहिले जितना अन्धेरा न था। कहीं से अन्दर प्रकाश आ रहा था। "अब हम इन्हें बुझा सकते हैं। सुरंग का द्वार समीप आ रहा है।" धूमक ने कहा।

उन तीनों ने मशालें बुझा दीं और उनको सुरंग के बड़े छेदों में छुपाकर रख दिया और आगे चलते गये। जब वे कुछ मुड़े, तो सूर्य की रोशनी इस तरह अन्दर आ रही थी कि उनकी आँखें चौंधियाँ गईं। तीनों शिकार करनेवाले शेरों की तरह सुरंग के द्वार पर गये और द्वार के दोनों ओर के पत्थरों के पीछे छुपकर आगे देखा। जो दृश्य उन्होंने वहाँ देखा, उसे देख वे काँप उठे।

एक बड़ा राक्षस था। उसने रंगबिरंगे चमड़ों को एक चोगा पहिन रखा था। सिर पर बड़ा किरीट था। हाथ में काँटों की गदा थी। हाथियों के जुते हुए रथ में कोई जंगल के रास्ते जा रहा था और उसके पीछे कितने ही हथियार बन्द राक्षस जा रहे थे। (अभी है)

बेकार चाल

विक्रमार्क ने हठ न छोड़ा। वह फिर पेड़ के पास गया, पेड़ पर से शव उतारकर, कन्धे पर डाल, हमेशा की तरह चुपचाप श्मशान की ओर चलने लगा। तब शव में स्थित बेताल ने कहा—"राजा, मन्त्र-तन्त्रों में विश्वास करने से कई ऐसे परिणाम हो जाते हैं, जिनकी कल्पना भी नहीं की जाती। एक तन्त्र करता है और दूसरे को उसका फल मिलता है। इसके दृष्टान्त के रूप में मैं तुम्हें भोजराज की कथा सुनाता हूँ। सुनो।" कहकर उसने यूँ कहानी सुनानी शुरु की।

विजयपुर के राजा भोजराज की मंजुला नाम की लड़की थी। वह इकलौती थी। इसलिए राजा उसे बड़ा लाड़ करता था। वह सयानी हुई। उससे शादी करनेवाले

वेताल कथाएँ

को क्योंकि उसके पिता की गद्दी भी मिलती इसलिए उसके लिए बहुत-से सम्बन्ध आये। परन्तु उसे वे सब नहीं जँचे और भोजराज भी अपनी लड़की की शादी किसी ऐसे व्यक्ति से नहीं करना चाहता था, जिसे वह न चाहती थी।

एक बार राजकुमारी अपनी सहेलियों के साथ चमन में गई और घर जाकर उसने अपने पिता से कहा कि शाम को उसने एक युवक देखा था, जो उसका पति हो सकता था और सिवाय उसके वह किसी और से शादी नहीं करेगी।

राजा दुविधा में पड़ा, उसे न माळूम था कि वह युवक कौन था, उसका क्या वंश था, वह कहाँ रहता था, क्या करता था।

उसने जब मन्त्री की सलाह माँगी, तो मन्त्री ने, नगर में राजा के पर्यटन की व्यवस्था की और यह भी घोषणा करवाई कि जो कोई अपने कष्ट सुख उनसे कहना चाहे वह उनसे कह सकता है। मन्त्री का ख्याल था कि जलूस देखने के लिए वह युवक भी आयेगा, जिसको राजकुमारी चाहने लगी थी।

उसकी चाल चल गई। अगले दिन जब राजा, अपनी लड़की के साथ, हाथी पर सवार होकर, जलूस में जा रहा था, तो मंजुला ने उस युवक को अपने पिता को दिखाया। राजा ने अपने सेवकों में से कुछ चुस्त सेवकों को बुलाया और कहा कि उस युवक के बारे में जितनी जानकारी मिल सके, उतनी जमा करें। राजा के महल वापिस आते आते उन्होंने बहुत-सी जानकारी जमा कर ली।

उस युवक का नाम सर्वदायी था। वह अपने माँ बाप का नाम नहीं जानता

था। कोई बुढ़िया उसे नगर में लाई थी। उसी ने उसका पालन-पोषण किया था। वह भी कई वर्ष हुए गुज़र गई थी। चूँकि लड़का बड़ा सुन्दर और आकर्षक था इसलिए अड़ोस पड़ोस के लोगों ने उस अनाथ को कोई कमी न होने दी। कुछ समय बाद, गुरु की सेवा शुश्रुषा करके वह पढ़ लिख भी गया था। वह सुन्दर ही नहीं, बुद्धिमान भी था।

यह सुनकर राजा ने अपनी लड़की से कहा—"बेटी, तुम अपना मन बदल लो। इस सर्वदायी का कोई वंश तक नहीं जानता। बिल्कुल अनाथ है। तुमने बड़े बड़े राजकुमारों को ही ठुकरा दिया। अगर तुमने इस ऐरे गैरे से शादी की, तो लोग तुम पर हँसेंगे। अगर मैंने अपने बाद, अपनी गद्दी इसे दी, तो मैं सिर ऊँचा करके नहीं चल सकता।"

"चाहें आप कुछ भी कहें, मैं इस लड़के के सिवाय किसी और से शादी नहीं करूँगी। अगर मैंने उससे शादी नहीं की, तो मैं मर जाऊँगी।" मंजुला ने कहा।

राजा यह सुन पसीना पसीना हो गया। उसने मन्त्री की सलाह माँगी, मन्त्री रात भर सोचता रहा। उसे सवेरे एक बात सूझी। वह यूँ थी।

पन्द्रह और सोलह वर्ष पहिले काश्मीर राजवंश में कुछ अनबन हुई। उनमें से कई शत्रुओं की ओर हो गये। राजमहल में विद्रोह प्रारम्भ हो गया। जंगल में भागते हुए राजा और चार पाँच वर्ष के राजकुमार का शत्रुओं ने पीछा किया और उनको मार दिया। आस पास के क्षेत्रों में यह अफवाह उड़ानी पड़ेगी कि राजकुमार की हत्या नहीं की गई है और वह कहीं लुका छुपा जी रहा है और जो दाग वगैरह
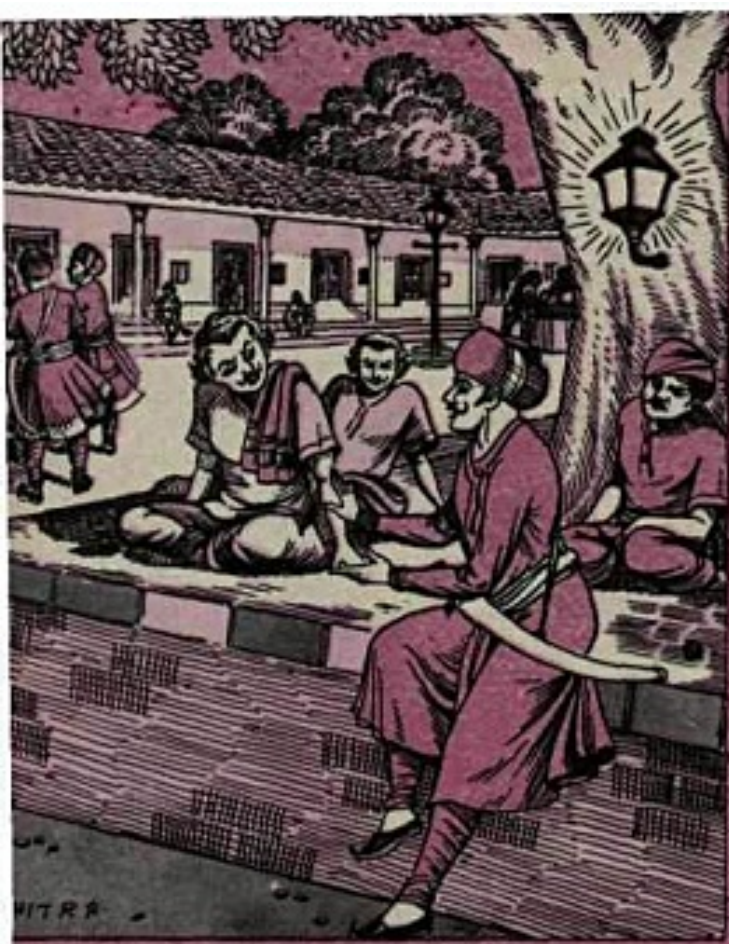
सर्वदायी के शरीर पर हैं, यह बताना होगा, कि काश्मीर के राजकुमार के शरीर पर भी थे। इतना प्रचार किया जाये कि लोग कहें कि सर्वदायी ही काश्मीर का राजकुमार था। इसके बाद मंजुला की यदि उससे शादी की गई तो कोई अंगुली नहीं उठायेगा, बल्कि सब खुश होंगे।

मन्त्री की यह बात राजा को बड़ी अच्छी लगी। यह उसने अपनी लड़की के पास जाकर कहा—"बेटी, तुम्हारी शादी हो ही जायेगी, कोई रुकावट नहीं होगी। पर मुझे एक साल का समय दो। तुम दोनों की वैभव पूर्वक शादी कराने के लिए कम से कम इतना समय लगेगा ही।

राजकुमारी इसके लिए मान गई।

इस बीच मन्त्री ने कुछ दूतों को आस पास के प्रान्तों में भेजा। उन्होंने सरायों में, या जहाँ कहीं पाँच दस लोग जमा होते थे, कहा—"हम काश्मीर देश के हैं। हम अपने पुराने राजकुमार की खोज कर रहे हैं। जैसा कि सब सोचते हैं, वे जंगल में नहीं मारे गये थे। कहते हैं कि उनकी बूढ़ी आया उनको लेकर यहाँ आयी थी। उनके दायें कान के नीचे एक दाग है और उसका नाक नक्शा यूँ है।" वे इस तरह अफवाह उड़ाने लगे।

ये अफवाहें उड़ती उड़ती विजयपुरी भी पहुँचीं। काश्मीर राजकुमार के बारे में जो कुछ कहा जा रहा था, वह सर्वदायी में पाकर, कई ने आश्चर्य प्रकट किया। "कहीं सर्वदायी ही तो काश्मीर युवराजा नहीं है?" यह सन्देह होते होते पक्का हो गया। फिर यह निश्चित रूप से कहा जाने लगा.... कि काश्मीर युवराज ही उनके बीच में अनाथ के रूप में घुम फिर रहा है। देखो, भाग्य कितना बलवान है।

जो सर्वदायी के हितैषी थे, उन्होंने कहा—"सर्वदायी के अच्छे दिन अवश्य फिर लौटेंगे। इसी कारण उसके जन्म का रहस्य यूँ खुल गया है। कौन राजकुमारी उससे शादी नहीं करना चाहेगी? फिर वह अपने ससुर की मदद से अपना राज्य जीत लेगा।"

जब सब उसे काश्मीर युवराज बता रहे थे, तो सर्वदायी भी सोचने लगा कि वह सचमुच युवराज था। वह भी किसी राजकुमारी से शादी करके, राजा होने के सपने देखने लगा।

इतने में दो राजाओं ने अपनी लड़कियों के चित्र, दूतों द्वारा उसके पास भिजवाये। उन्होंने खबर भिजवाई कि वे अपनी लड़कियों का विवाह उससे करने के लिए तैयार थे। सर्वदायी ने चित्रों को देखा और वह कनकपुर के राजा की लड़की के चित्र को देखकर उस पर मुग्ध हो गया। वह उससे विवाह करने के लिए मान गया। कनकपुर की राजकुमारी सचमुच बड़ी सुन्दर थी।

परिस्थिति कुछ ऐसी बनी कि राजा भोजराज को विश्वास हो गया कि यदि उसने अपनी लड़की का सर्वदायी से विवाह कर दिया, तो किसी को कोई आपत्ति न होगी। इसलिए उसने सर्वदायी को अपने घर बुलवाया, उसे अपनी लड़की दिखाई। "तुम चूँकि मेरे ही राज्य में रहते हो, इसलिए तुम्हें विवाह के लिए किसी और राज्य में जाने की ज़रूरत नहीं है। मैं अपनी लड़की की शादी तुम से कर दूँगा।"

"मुझे माफ़ कीजिये। मैंने पहिले ही एक और राजकुमारी को अपना मन दे दिया है और वचन भी।" यह कहकर सर्वदायी ने विदा ली।

यह जानते ही कि सर्वदायी ने उसे ठुकरा दिया था मंजुला मूर्छित हो गई और उसी मूर्छा में उसकी मृत्यु हो गई।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर पूछा—"राजा! मंजुला के दुर्मरण का कौन कारण है? क्या सर्वदायी, जिसने उसे ठुकरा दिया था, या राजा, जिसने कहा था कि एक वर्ष में उस युवक से ही शादी करवा देगा, जिसे वह चाहती थी? या मन्त्री, जिसने अफवाह उड़ा दी थी कि वह छुका छुपा राजकुमार था। इन प्रश्नों का तुमने जान बूझकर उत्तर न दिया, तो तुम्हारे सिर के टुकड़े टुकड़े हो जायेंगे।"

इस पर विक्रमार्क ने कहा—"इसमें सर्वदायी का कोई दोष नहीं है। राजकुमारी से प्रेम करने की उसे कोई ज़रूरत न थी। राजकुमारी ने पहिले ही कहा था कि यदि उसने उससे शादी न की, तो वह मर जायेगी। उसके पिता का भी कोई दोष नहीं है। यदि मन्त्री सलाह न देता, तो अपनी लड़की को खुश करने के लिए वह किसी ऐरे गैरे से ही उसकी शादी कर देता। दोष मन्त्री का है। जब उसने यह चाल सोची थी, तो कम से कम सर्वदायी को तो अपनी चाल के बारे में बताया होता? यदि सर्वदायी को यह न पता होता कि वह अज्ञात युवराज था, तो वह मंजुला को न ठुकराता। मन्त्री की चाल तो अच्छी थी। पर उसको सफल बनाने के लिए उसने आवश्यक सावधानी नहीं बरती। इसलिए ही मंजुला को अकाल मरना पड़ा।"

राजा का इस प्रकार मौन भंग होते ही, बेताल शव के साथ अदृश्य हो गया और फिर पेड़ पर जा बैठा। (कल्पित)

सुल्तान की बिल्ली

मिसार शहर में मोहम्मद नाम का एक व्यापारी रहा करता था। उसने तरह तरह का माल खरीदा। कई नौकरों के साथ व्यापार के लिए निकल पड़ा। वह जगह जगह पड़ाव करता। अपने पास की चीज़ें बेचता, नई नई चीज़ें खरीदता, सफर करता करता वह एक नये शहर में पहुँचा।

उस शहर में मोहम्मद ने कुछ आराम करना चाहा। एक सराय में वह अपने नौकरों के साथ रहने लगा। वह पीता खाता आराम कर रहा था कि एक व्यापारी उसके पास आया, "हुज़ूर, लगता है, आप किसी दूर देश से आये हुए हैं। आप शायद यहाँ के तौर तरीके नहीं जानते हैं?"

"बताइये, वे क्या हैं, मैं मालूम कर लूँगा।" मोहम्मद ने कहा।

"इस शहर में आनेवाले प्रति व्यापारी को, अच्छे अच्छे नज़राने लेकर सुल्तान के दर्शन करने होते हैं। नज़राने लेकर सुल्तान, उस व्यापारी को शतरंज खेलने के लिए न्योता देते हैं। यह ही यहाँ की मर्यादा है।" उस शहर के व्यापारी ने कहा।

यद्यपि मोहम्मद सुल्तान को नहीं देखना चाहता था, तो भी उसे सुल्तान को देखना पड़ा। वह एक सोने की परात में कुछ बहुमूल्य वस्त्र रखकर सुल्तान के महल में गया।

सुल्तान ने वे सब उपहार स्वीकार कर लिये। मोहम्मद से उसने अपने देश के

सम्पत्ति मेरी हो जायेगी और तुम्हें कैदखाने में डलवा दूँगा। अगर एक दीया भी गिर गया तो जो तुम चाहो वह मेरा कर सकते हो। मेरा सारा खजाना तुम्हारा होगा।" सुल्तान ने मोहम्मद से कहा।

बिचारा मोहम्मद करता भी तो क्या करता? न वह भाग सकता था, न शतरंज ही खेल सकता था? सुल्तान के नियम के अनुसार उसे खेलना पड़ता और उसे मरना पड़ता। मोहम्मद अपने को कोसने लगा कि उसने उस मनहूस देश में क्यों पैर रखा था, उसे अपनी दौलत पर, घर बार पर, अपने पर मोह जाता रहा।

बारे में और उन देशों के बारे में जहाँ जहाँ वह गया था, कई बातें मालूम की। फिर उसने कहा—"आज रात को हमारे घर आ जाओ। शतरंज खेलेंगे।"

मोहम्मद अन्धेरा होने के बाद राज महल में गया।

"खेल का नियम बताता हूँ, सुनो। मेरे पास एक बड़ी अक्लमन्द बिल्ली है। वह रात भर अपनी पूँछ पर सात दीये रख सकती है। जब तक हम खेल खेलते रहें, अगर वह तब तक उन दीयों को अपनी पूँछ पर रखे रहे, तो तुम्हारी

सुल्तान ने अपनी चतुर बिल्ली को बुलाया। उसे एक जगह बिठाया, उसकी पूँछ पर उसने सात दीये रखवाये। फिर सुल्तान और मोहम्मद शतरंज खेलने लगे।

मोहम्मद दाँव खेलता जाता और बीच बीच में एक नज़र से बिल्ली की ओर देखता जाता था। वह खिलौने बिल्ली की तरह निश्चल बैठी थी।

तीन दिन तीन रात तक शतरंज का खेल चलता रहा। बिल्ली हिली नहीं।

मोहम्मद और न सह सका। उसने हार मान ली और खेलना बन्द कर दिया।

सुल्तान ने सराय से व्यापारी का सारा माल और पैसा मंगवा लिया और उसे कैद में डलवा दिया।

उधर मोहम्मद की पत्नी जरीना अपने पति की इन्तज़ार करती रही। वह तो नहीं आया, पर उसका एक नौकर, भागा भागा आया और जो कुछ हो गया था, उसके बारे में उसने उसको बताया।

सब सुनकर, जरीना ने अपने पति को कैद से छुड़ाने की ठानी। उसने बहुत-से चूहे पकड़वाकर एक सन्दूक में रखवाये। कुछ सोना और चान्दी लेकर, पुरुष वेष धारण करके, कुछ नौकरों के साथ वह सीधे सुल्तान के शहर गई।

वहाँ उसने सराय में पड़ाव किया। उसने कुछ नौकरों को सराय में रहने के लिए कह, कुछ नौकरों को साथ लेकर, एक बड़ी परात में उपहार रखवाकर वह सुल्तान के महल में गई। जब वह सुल्तान के साथ शतरंज खेल रही हो, तो, उसने नौकरों को हिदायत की कि वे एक एक चूहा उसके कमरे में छोड़ते जायें।

सुल्तान ने जरीना को देखकर सोचा कि वह सचमुच मर्द थी।

सुल्तान ने उसके लाये हुए उपहार स्वीकार कर लिये। उसे खेल के नियम बताये और उसे शतरंज खेलने के लिए बुलाया। जब वे दोनों खेल रहे थे, तो बिल्ली आयी और अपनी पूँछ पर सात दीये रखकर, पत्थर के खिलौने की तरह बैठ गई।

इतने में जरीना के नौकरों ने उस कमरे में एक चूहा छोड़ा, जहाँ शतरंज खेला जा रहा था। बिल्ली ने उस चूहे को पकड़ना चाहा।

परन्तु सुल्तान ने बिल्ली की ओर आँखें बड़ी कीं। बिल्ली ने अपने को सम्भाला और हमेशा की तरह चुपचाप बैठ गई। थोड़ी देर बाद जरीना के नौकरों ने तीन चार चूहे और छोड़े। वे उस कमरे में इधर उधर भागने लगे। उनको देखकर बिल्ली अपने को काबू में न रख सकी। वह जहाँ बैठी थी, वहाँ से चूहे पकड़ने के लिए कूदी। उसकी पूँछ पर रखे सातों दीये नीचे जा गिरे।

तुरत जरीना के आदमी अन्दर आये। उन्होंने सुल्तान को पकड़ लिया और उसे खूब पीटा। सुल्तान चिल्लाया। उसके नौकर उसका चिल्लाना सुनकर भी उसकी मदद करने अन्दर न आये। उनको भी अपने सुल्तान से, जो बड़ा नीच था, क्रूर था, नफ़रत थी।

जरीना ने सुल्तान को कैद में डलवा दिया और कैद से अपने पति को और उसकी तरह बन्द किये गये और लोगों का छुड़वा दिया और वह अपने पति के साथ अपने देश चली गई।

भोन्दू

कावेरी के तट पर ब्राह्मणों के एक गाँव में गोवर्धन नाम का एक गरीब रहा करता था। उसके बहुत दिनों बाद एक पुत्र हुआ। माँ बाप ने उस लड़के का नाम श्रीवर्धन रखा। छुटपन से ही वह जरा भोन्दू-सा था। जहाँ बैठ जाता, वहीं बैठे रहता। जब तक कोई न उठाता, तो वह न उठता। बुलाने पर आता, और जाओ कहने पर चला जाता। आखिर उसे सुलाने के लिए भी किसी न किसी को कहना पड़ता—"सो जाओ।"

यह सोच कि पढ़ाना लिखाना शुरु कर देने से उसका भोन्दूपन जाता रहेगा, पिता ने श्रीवर्धन को गुरुकुल भेजा। वह बारह वर्ष गुरु के पास रहा, फिर भी वह बिल्कुल न बदला। वह बुद्धू था पर आलसी न था।

बारह वर्ष की शिक्षा के बाद भी श्रीवर्धन के पिता ने उसमें कोई परिवर्तन न देखा। वह उससे घर के काम ही करवाने लगा। उसकी माँ की नज़र जाती रही। उसके पिता को रसोई तक करनी पड़ती थी। लड़के से हर बात कहकर, करवा करवा कर वह खिझ उठा था। अगर सयाने लड़के की शादी करवा दी तो उसकी पत्नी ही उससे कहकर सब काम करवा लेगी और हर रोज़ उसे कम से कम अंगुलियाँ तो नहीं जलानी पड़ेंगी? यह सोच गोवर्धन ने अपने लड़के का एक बुद्धिमान लड़की से विवाह कर दिया।

पत्नी के घर आ जाने के कारण श्रीवर्धन के लिए कुछ भी करने को न

रहा। वह हमेशा एक ही जगह बैठा रहा करता। श्रीवर्धन की पत्नी से उसके ससुर ने कहा—"तुम अपने पति को काम बताकर काम कर लिया करो न? उसने कह तो दिया था, पर वह अपने पति को कुछ न कहती और सब काम स्वयं कर लिया करती।

अपने लड़के को हमेशा मिट्टी के माधो की तरह बैठा देख पिता ने श्रीवर्धन से कहा—"पूछ लो न कि तुम्हारी पत्नी क्या काम करवाना चाहती है। क्यों नहीं कुछ काम करते?"

श्रीवर्धन ने पत्नी के पास जाकर पूछा—"अगर कोई काम हो तो बताओ, मैं कर दूँगा।"

"बड़े लोग काम बताते हैं और छोटे लोग करते हैं। सासजी से पूछ देखिये कि कहीं कोई काम तो नहीं है।" पत्नी ने कहा।

श्रीवर्धन ने माँ के पास जाकर कहा—"माँ, अगर कोई काम हो तो बताओ। कर दूँगा।"

"मैं तो अन्धी हूँ। मुझे क्या मालूम? तुम अपने पिताजी से पूछो।" माँ ने कहा।

"मेरी पत्नी और मेरी माँ मुझे कोई काम नहीं बता रहे हैं। क्या करूँ, आप ही बताइये।" श्रीवर्धन ने पिता से कहा।

"मेरी फूटी किस्मत की वजह से ही तुम मेरे घर पैदा हुये। मैं क्या बताऊँ? जाओ, भगवान की तपस्या करो। भगवान पसीज उठेंगे, तो कोई वर दे देंगे।" पिता ने खिझकर कहा।

श्रीवर्धन वन में जाकर तपस्या करने लगा। कुछ समय बाद, भगवान उसके समक्ष प्रत्यक्ष हुए। "मैं तुम्हारी तपस्या से सन्तुष्ट हूँ। कहो क्या वर चाहते हो?"

"क्या वर माँगना चाहिए मुझे घर जाकर अपने घरवालों से पूछने दीजिये। आप यहीं रहिये...." कहता, श्रीवर्धन खुशी खुशी घर गया और उसने पिता से कहा—"जैसा आपने कहा था, मैंने तपस्या की। भगवान ने प्रत्यक्ष होकर मुझ से वर माँगने के लिए कहा। क्या वर माँगने के लिए आप कहते हैं?"

"क्यों नहीं माँगा कि ढ़ेर-सा ऐश्वर्य चाहिए। छुटपन से हमारी ज़िन्दगी गरीबी की ही तो रही है।" पिता ने कहा। इतने में माँ ने लड़के की बात सुनी। "तुम भगवान से कहो कि मेरी नज़र मुझे फिर मिल जाये।"

फिर पत्नी ने उसे अलग ले जाकर कहा—"माँगिये कि हमें सन्तान मिले।"

सब से "अच्छा, अच्छा" कहकर श्रीवर्धन उस जगह भागा भागा गया, जहाँ उसने तपस्या की थी। पर वहाँ भगवान न दिखाई दिया। वह भगवान के लिए इधर उधर भाग भाग कर देखने लगा। उसे एक जगह एक मुनि तपस्या करता दिखाई दिया। जो भगवान मुझे कुछ समय पहिले प्रत्यक्ष हुए थे, क्या इस ओर गये हैं?"

यह सुनकर मुनि को आश्चर्य हुआ। उसने श्रीवर्धन से पूरी जानकारी ली। सब सुनकर मुनि ने कहा—"जब भगवान प्रत्यक्ष हुए थे, तो तुमने वर क्यों नहीं माँगे? उस भगवान से वर न माँगकर तुम घर चले गये थे? कहीं मर क्यों नहीं गये?" उसने ईर्ष्यावश कहा, चूँकि श्रीवर्धन को भगवान का साक्षात्कार हो गया था।

श्रीवर्धन मुनि के कथनानुसार कहीं मरने के लिए जगह खोजने लगा। थोड़ी दूरी पर उसे एक सीधा पहाड़ दिखाई दिया। उस पर से कूदकर मरने के लिए श्रीवर्धन उस पहाड़ पर चढ़ने लगा।

आधे रास्ते में एक जंगली मिला। उसने श्रीवर्धन से कहा—"पहाड़ पर तो कुछ भी नहीं है, क्यों चढ़ रहे हो?"

"ऊपर से नीचे कूदकर मरने के लिए" कहकर श्रीवर्धन ने जंगली को अपनी सारी कहानी सुनाई।

जंगली ने सब सुनकर कहा—"तुम भी क्या आदमी हो? भगवान ने तुम से वर चाहने के लिए कहा था, पर क्या उसे तुम्हें उन्होंने बताने के लिए कहा था? अगर तुम न बताते तो क्या भगवान को न मालूम होता कि तुम क्या चाहते हो? जाओ, घर जाओ। तुम सब की इच्छायें भगवान पूरी कर देंगे।" जंगली ने कहा।

जंगली के कहे अनुसार भोन्दू श्रीवर्धन घर चला आया। सारा घर ऐश्वर्य से भरा पड़ा था। उसकी माँ की आँखें भी ठीक हो गई थीं। श्रीवर्धन बड़ा खुश हुआ। एक साल बीतते बीतते उसकी पत्नी के सन्तान भी हो गई।
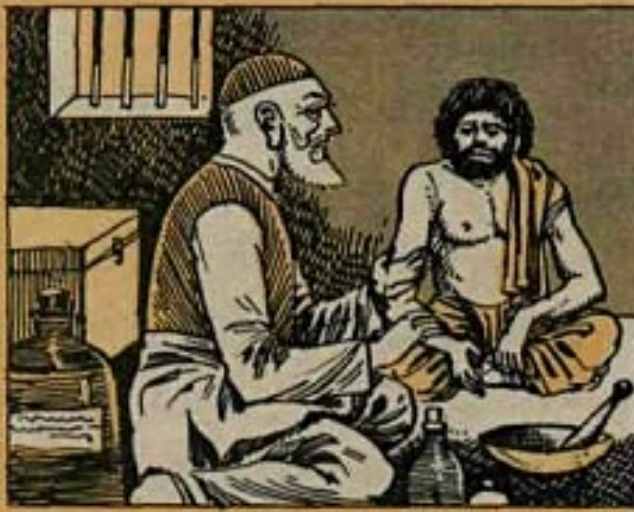
सजीव मस्जिद

उत्तर देश में एक नगर पर एक सुल्तान का शासन था। वहाँ एक प्रसिद्ध फकीर रहा करता था। वह वैद्यक में बड़ा तेज़ था। जो कोई दवा वह देता, वह रामबाण-सी होती। इसलिए क्या हिन्दू क्या मुसलमान सभी उसी से दवा लिया करते।

फकीर दवा के लिए पैसे नहीं लिया करता। परन्तु रईस जब उससे ईलाज करवाते, तो उसे अपनी अपनी शक्ति के अनुसार रुपया दिया करते। दोनों धर्मों के लोग उसको आदर की दृष्टि से देखा करते। वह भी सबको समान दृष्टि से देखा करता।

कुछ समय बाद फकीर के पास बहुत-सा रुपया जमा हो गया। उसने उस रुपये को किसी अच्छे काम में लगाने का निश्चय किया। यह सोच वह सुल्तान के पास कुछ जमीन माँगने गया। यह सोच कि फकीर कोई घर बनाना चाहता था। सुल्तान ने उसके लिए जमीन मंजूर कर दी।

फकीर ने अपने पैसे से सुल्तान की दी हुई जगह पर एक मस्जिद बनवाई। वह भी हमेशा उसी मस्जिद में रहा करता और वैद्यक किया करता।

मुसलमानों की भीड़ वहाँ हमेशा बनी रहती। वे मस्जिद आते, नमाज पढ़ते और जिस किसी को दवा की जरूरत होती, तो वहाँ से ले जाया करता। चूँकि फकीर मस्जिद में रहा करता था इसलिए हिन्दू उस तरफ न आया करते। वे फकीर से ईलाज भी न करवाते।

यह देख फकीर को दुख हुआ। उसने सोचा कि मस्जिद बनवाना ही गलती थी।

अजीज़

एक दिन उसने अपनी बनवाई हुई मस्जिद स्वयं तोड़ दी और अपने रहने के लिए वहाँ एक झोंपड़ी बनवायी।

यह देख मुसलमानों को बड़ा गुस्सा आया। उन्होंने लोगों को उकसाया कि फकीर ने यूँ मज़हब के खिलाफ काम किया था। उन्होंने आकर फकीर की झोंपड़ी गिरा दी और सुल्तान के पास जाकर उसकी शिकायत की।

सुल्तान ने फकीर को बुलाकर पूछा—"क्या यह सच है कि जो जमीन मैंने तुम्हें दी थी, वहाँ तुमने पहिले मस्जिद बनवाई, और फिर उसे तोड़ दी?

"हाँ सच है।" फकीर ने कहा।

इतने बड़े अपराध पर सुल्तान ने फकीर को मौत की सज़ा दी। यह सुनते ही फकीर दोनों हाथ ऊपर उठाकर जोर से हँसा।

"तुम्हें मौत की सज़ा दी गई है और तुम रोने के बजाय हँस रहे हो। क्यों?" सुल्तान ने फकीर से पूछा।

"हुज़ूर, मेरे दोनों हाथों के बीच का सिर मस्जिद की तरह है। पत्थर की मस्जिद के तोड़ने के कारण ही मेरा सिर कटवा रहे हैं न आप? परन्तु मेरे सजीव मस्जिद को तुड़वाने के लिए न मालूम अल्लाह आपको क्या सज़ा दें, यह सोच मुझे हँसी आ गई।" फकीर ने कहा।

सुल्तान घबरा गया और फकीर को तुरत छुड़वा दिया। फ़कीर हमेशा की तरह सब को दवा देता रहा। सुल्तान की दी हुई जगह पर एक छोटी-सी झोंपड़ी बनाकर उसमें सन्तोष के साथ रहने लगा।

तावीज़ की करामात

कैरो नगर में महमूद नाम का एक बड़ा गरीब युवक रहा करता था। उसका पिता मशक में पानी लाया करता और रईसों की दुकानों के सामने उसे छिड़ककर कुछ रुपया कमाता, जिन्दगी बसर करता था। जब महमूद कुछ बड़ा हुआ तो वह भी एक मशक लेकर पिता की मदद किया करता। कुछ समय बाद उसका पिता मर गया। महमूद को पिता से दो मशकें ही बिरासत में मिलीं।

महमूद ताकतवर नहीं था। वह जान गया कि जो कुछ उसका पिता करता आया था, वह नहीं कर पायेगा। वह दिन भर गलियों में भीख माँगा करता, रात में मस्जिद के पास मशकों का तकिया बनाकर सो जाया करता।

एक दिन महमूद के हाथ में एक धनी ने पाँच दीनारें रखीं। उस दिन धनी का जन्म दिन था। उसे खर्च करके महमूद ने पेट भर खाना खाना चाहा। वह ढाबों की ओर चला।

रास्ते में उसे लोगों का एक झुण्ड दिखाई दिया। उस झुण्ड में एक बन्दर को पकड़कर एक आदमी चल रहा था। उस बन्दर को देखकर महमूद ने सोचा कि उसे जिन्दगी में और कोई मनोरंजन नहीं चाहिए था। इसलिए वह बन्दर वाले आदमी के पास गया। उससे भाव ताव किया और उसके पास जो पाँच दीनारें थीं, उन्हें देकर उसने वह बन्दर खरीद लिया।

बन्दर खरीदने के बाद महमूद के सामने एक बड़ी समस्या आ पड़ी। उसे

रामदास

लेकर वह मस्जिद के पास नहीं जा सकता था। इसलिए उसने एक उजड़े घर में जाकर रात काट देनी चाही। दूसरी समस्या भोजन की थी।

पर ये समस्यायें यूँहि हल हो गई, जब वह बन्दर के साथ उजड़े हुए घर में गया, तो बन्दर ने अपना शरीर हिलाना शुरु किया और वह यकायक एक युवक में बदल गया। इस परिवर्तन को देख महमूद चकित हो उठा। तब उस युवक ने उससे कहा—"महमूद, जितना पैसा तुम्हारे पास था, वह सब लगाकर तुमने मुझे खरीदा और अपने खाने के लिए भी पैसे न रखे। यह लो सोने की दीनार, इसे ले जाकर दुकान से हम दोनों के लिए अच्छी अच्छी चीज़ें ले आओ।"

"मैंने तुम्हें क्यों खरीदा? तुम कौन हो? कहाँ से आये हो? क्या तुम चाहते हो?" महमूद ने पूछा।

"तुम यूँ प्रश्न न पूछो, जल्दी जाओ, और कुछ खाने के लिए ले आओ। बड़ी भूख लग रही है। एक बात याद रखो। मैं तुम्हारा भाग्य देवता हूँ। मेरे कारण तुम्हें धन, कीर्ति, और ओहदा भी मिलेगा।" बन्दर युवक ने कहा।

महमूद भागा भागा दुकानों के पास गया और कीमती कीमती खाने की चीज़ें ले आया। दोनों ने बैठकर खाया। वह महमूद के लिए एक बड़ी दावत-सी थी। पेट भर खाना खाने के बाद, वे दोनों आराम से सो गये।

अगले दिन बन्दर युवक ने महमूद से कहा—"अरे, भला हम इस उजड़े घर में क्यों सड़ें? पैसा देता हूँ, तुम कोई अच्छा बड़ा-सा घर किराये पर तय करो।" उसने उसे ढेर-सा सोना दिया। उनके

रहने के लिए बड़ा-सा मकान और पहिनने के लिए ढ़ेर से कपड़ों का इन्तज़ाम हो गया। महमूद ने जब नहा धोकर नये कपड़े पहिने तो वह राजकुमार-सा दिखाई देने लगा।

"देखो, महमूद अगर तुम्हें चान्द-सी राजकुमारी मिले, तो क्या तुम उससे विवाह करोगे?" बन्दर युवक ने पूछा।

"अवश्य।" महमूद ने कहा।

"तो, तुम यह गठरी ले जाओ और इसे ले जाकर शहर के सुल्तान को उपहार में दो। जब वह पूछें कि क्या चाहिए, तो कहना कि वह अपनी लड़की की शादी तुम से करे। वह लड़की ही तुम्हारी किस्मत में है। इसलिए सुल्तान ज़रूर तुमको अपना दामाद बना लेगा।" बन्दर युवक ने कहा।

महमूद राजमहल की ओर गया। पहरेदारों ने उसके कपड़े देखकर सोचा कि वह कोई बड़ा आदमी था और वह सुल्तान को भेंट देने आया था, तो उसे अन्दर जाने दिया। महमूद ने सुल्तान को सलाम किया और अपनी लाई हुई गठरी को उसे देते हुए कहा—"यह उपहार आपके लिए नाचीज़-सी है। पर

मेरे लिए बहुत बड़ी चीज़ है। आप कृपया इसे स्वीकारें।"

सुल्तान ने उसे ले लिया और वहाँ खड़े अपने वज़ीर को वह दे दी। जब उसने वह गठरी खोली तो उसमें बादशाहों के पहिनने लायक गहने थे। सुल्तान उन्हें देख चकित हो गया। "हमने तुम्हारा नज़राना मंजूर कर लिया, बोलो इनके बदले में तुम क्या चाहते हो?"

"मैं कोई उपहार नहीं चाहता। आप मेरी शादी अपनी लड़की से कर दीजिए।" महमूद ने कहा।

सुल्तान, महमूद की ओर काफी देर तक देखता रहा। फिर उसने वज़ीर की ओर मुड़कर कहा—"मुझे तो कोई एतराज़ नहीं है। तुम्हारी क्या सलाह है?"

वज़ीर ने सिर हिलाकर कहा—"लड़की से शादी करने लायक ही यह मालूम होता है, फिर भी एक छोटी मोटी परीक्षा रखी जाये तो अच्छा हो।"

"क्या परीक्षा?" सुल्तान ने वज़ीर से पूछा।

"हमारे पास जो बड़ा हीरा है, वह इसे उपहार में देकर, कहिये कि उतना बड़ा हीरा एक और लाये।" वज़ीर ने कहा।

महमूद, सुल्तान के हीरे को देखकर हताश हो गया। वह बड़ा ही अमूल्य हीरा था। "मैं कल ही इस प्रकार का हीरा लाकर, आपके दर्शन करूँगा।" यह भरोसे के साथ कहकर वह चला गया।

घर पहुँचते ही, बन्दर युवक ने पूछा—"क्या तुम्हारा काम हो गया है?"

महमूद ने जो कुछ हुआ था, उसे बताया। बन्दर युवक ने उस तरह के दस हीरे लाकर दे भी दिये। अगले दिन सवेरे महमूद दस बड़े बड़े हीरे लेकर, सुल्तान के पास गया। "आप जैसे हीरे चाहते थे, मेरे पास एक नहीं, वैसे दस मिले। इसलिए मैं दसों ही ले आया हूँ।"

सुल्तान ने वजीर की ओर इस तरह देखा, जैसे कि उसकी सलाह चाहता हो। वजीर ने सिर हिलाकर सूचित किया कि शादी के लिए मान लिया जाय। सुल्तान ने काजी और गवाहों को बुलवाया और दस्तावेज लिखवा लिया कि उसकी लड़की की शादी महमूद से हो गई थी। महमूद

उस दस्तावेज को लेकर घर गया और उसे बन्दर युवक को दिखाया।

"मैंने कहा था न? तुमने मेरी मदद से सुल्तान की लड़की से शादी कर ली। इसलिए तुम मेरे लिए छोटा-सा उपकार कर दो।" बन्दर युवक ने कहा।

"उपकार? अगर तुम मेरी जान भी चाहो, तो मैं देने के लिए तैयार हूँ।" महमूद ने कहा।

"तुम्हारी पत्नी के दायें हाथ में एक बाजूबन्द है। आज रात जब तुम दोनों को कमरे में भेजा जाये, तो वह बाजूबन्द माँगकर मुझे दे देना। उसके बाद ही तुम उसके साथ गृहस्थी करना। यह ही मेरी इच्छा है।" बन्दर युवक ने कहा।

"यदि मैं माँगूँगा, तो मेरी पत्नी शायद मना न करे। जब तक मैं वह बाजूबन्द लाकर न दे दूँगा, तब तक मैं उसे पर स्त्री के रूप में ही देखूँगा।" महमूद ने वचन दिया।

रात को सुल्तान की लड़की के कमरे में आते ही, महमूद ने कहा कि वह उसके दायें हाथ का बाजूबन्द चाहता था।

"चाहते हैं तो ले लीजिये। यह कोई बहुमूल्य नहीं है। मेरे छुटपन में जो तावीज मेरी आया ने बाँधी थी, वह उसमें है।" कहते हुए सुल्तान की लड़की ने अपना बाजूबन्द महमूद को दे दिया।

"अभी आता हूँ।" कहकर महमूद बड़ी तेजी से अपने घर गया। उस बाजूबन्द को, बन्दर युवक को देकर वह राजमहल वापिस चला आया। वह अपने कमरे में पैर रख ही रहा था कि उसे कुछ कुछ बेहोशी-सी आयी। आँखों के सामने अन्धेरा-सा छा गया। जब उसे

होश आया, तो वह चीथड़े पहिने, उस उजड़े घर के ऊबड़ खाबड़ फर्श पर पड़ा था, न बन्दर, न बन्दर युवक ही वहाँ दिखाई दिये। सुल्तान, सुल्तान की लड़की, विवाह, राजमहल, सब उसे एक सपने-से लगे।

महमूद पगलाया हुआ-सा कैरो नगर की गलियों में फिरने लगा। एक जगह एक गली में, एक ज्योतिषी बैठा हुआ था। उसके सामने कुछ कागजात थे और कुछ यन्त्र। उसको देखते ही महमूद की जान में जान आई। वह उसके सामने बैठ गया और उससे अपनी जन्मकुण्डली बताने के लिए कहा।

ज्योतिषी ने महमूद की ओर देखकर पूछा—"तुम ही अपनी पत्नी को खो बैठ हो न?"

"हाँ" महमूद ने घबराकर कहा।

"अरे नादान कहीं के, जिस बन्दर को तुमने खरीदा था, वह युवक नहीं, एक दुष्ट पिशाच था। उसने अपने स्वार्थ के लिए तुम्हारा उपयोग किया। उस दुष्ट की नजर सुल्तान की लड़की पर कभी से थी। चूँकि उसके हाथ पर ताबीज़ बँधा था, इसलिए वह उसका कुछ न बिगाड़ सका। उस बाजूबन्द को पाने के लिए उसने तुम्हारी मदद माँगी। फिर वह उसे लेकर चम्पत हो गया। पर मैं सोचता हूँ कि उस पिशाच का सत्यानाश किया जा सकता है।" कहकर उसने एक कागज पर इधर उधर लकीरें खींचीं। फिर उसे महमूद के हाथ में देते हुए कहा—"इस कागज को ले जाकर, जो जगह मैं बताऊँ, वहाँ जाओ। वहाँ एक झुण्ड आयेगा, उस झुण्ड के सरदार को पहिचान लेना। उसे यह कागज देना।"

ज्योतिषी की बतायी हुई जगह के बारे में महमूद ने सारी जानकारी मालूम कर ली और रात को वहाँ पहुँच भी गया। वह एक अजीब-सी जगह थी। जहाँ देखो वहाँ ऊँची ऊँची घास उगी हुई थी। वह एक जगह बैठ गया। उसे ऐसा लगा, जैसे सब जगह पक्षी उड़ रहे हों।

इतने में उसे मशालें दिखाई दीं। पर मशाल पकड़े हुए लोग उसे न दिखाई दिये। असंख्य मशालें उसे हवा में उड़ती-सी दिखाई दीं। पास आने पर उनके बीचों बीच एक सिंहासन पर एक व्यक्ति आता दिखाई दिया। उस व्यक्ति को अपनी ओर देखता जान यद्यपि डर के कारण उसके मुख से बात तक न निकल पाती थी, तो भी उसने वह कागज उसको दे दिया।

उसने कागज में जो लिखा था, उसे पढ़कर मशालें रुकवाईं और एक अदृश्य व्यक्ति को बुलाकर कहा—"तुम कैरो जाओ और वहाँ से इस पिशाच को जँजीरों में बाँधकर लाओ।"

एक घंटे में, वह बन्दर युवक जँजीरों में बँधा हुआ, वहाँ लाया गया। अदृश्य

व्यक्तियों के सरदार ने उससे पूछा—"क्यों, तुमने इस आदमी के मुख का कौर छीन लिया और खा लिया?"

"उस कौर को मैंने अभी तक खाया नहीं है। मैंने ही उस कौर को अपने लिए तैयार किया था।" बन्दर युवक ने कहा।

"उसका बाजूबन्द तुरत उसे दे दो।" सरदार ने कहा।

"उसे कोई भी मुझ से नहीं ले सकता।" कहकर वह बन्दर युवक, उस बाजूबन्द को निगल गया।

तुरत सरदार ने उसके सिर को जोर से दबाया। बन्दर युवक पहिले झुका, फिर एक फल की तरह उसके दो टुकड़े हो गये। फिर सरदार की आज्ञा पर एक अदृश्य व्यक्ति ने, बन्दर युवक के कलेबर में से बाजूबन्द लेकर, महमूद के हाथ में रखा।

महमूद के हाथ में वह बाजूबन्द आया ही था कि सारा दृश्य बदल गया। बेहोश होने से पहिले, जैसे वह सुल्तान के राजमहल में था, वैसे ही फिर वह वहाँ था। सुल्तान की लड़की शैय्या पर सो रही थी। उसने ज्योंहि उसके हाथ पर, बाजूबन्द बाँधा त्योंही वह उठकर बैठ गई।

उसे इस बार ऐसा लगा, जैसे कोई एक और सपना देखा हो। अगले दिन उससे, उसकी पत्नी ने नहीं पूछा—"तुम दो दिन के लिए कहाँ चले गये थे?

अब महमूद के सामने कोई दिक्कत न थी। वह सुल्तान की लड़की के साथ आराम से गृहस्थी करने लगा। चूँकि सुल्तान के कोई लड़का न था, इसलिए उसके गुज़र जाने के बाद वह ही कैरो का सुल्तान बना।

काल की तपस्या

काल नाम के एक ब्राह्मणने पुष्कर के तट पर, दो सौ वर्षों तक दिन रात तपस्या की। उसके सिर से करोड़ सूर्यों से भी अधिक तेज़ निकला। तब ब्रह्मा, इन्द्र आदि देवताओं ने आकर पूछा—"ब्राह्मण, क्यों तुम अपनी तपस्या से लोकों को जला रहे हो? तुम क्या वर चाहते हो?"

"मैं यही वर चाहता हूँ कि मेरा मन सिवाय तपस्या के किसी और बात पर न लगे।"

"यह नहीं! कुछ और माँगो।" जब देवताओं ने उससे बार बार कहा, तो काल पुष्कर का तट छोड़कर हिमालय के उत्तर पार्श्व में गया और वहाँ तपस्या करने लगा। तब देवताओं ने काल के पास यम को भेजा। यम ने कहा—"ब्राह्मण! मनुष्य इतना समय नहीं जीते हैं। लोक मर्यादा के अनुसार तुम अपने प्राण छोड़ दो।"

"अगर मेरी आयु हो गई है, तो मुझे क्यों नहीं ले जाते? क्या अपने प्राण स्वयं छोड़कर मुझ से आत्म हत्या करने के लिए कहते हो?" उसने पूछा। यम में काल के प्राण लेने की शक्ति न थी.... वह अपना जाल कन्धे पर डाल, चला गया।

इन्द्र को जब कुछ और न सूझा, तो वह काल को उठाकर स्वर्ग में ले गया। इन्द्र का ख्याल था कि स्वर्ग के सुखों को अपनी आँखों देखकर, ब्राह्मण का मन बदल जायेगा। परन्तु काल वहाँ भी तपस्या करने लगा। "उस समय ईक्ष्वाकू उस तरफ़ आया। उसने सब कुछ मालूम करके काल से कहा—"यदि तुम देवताओं

से वर नहीं चाहते हो, तो मुझ से वर माँगो, मैं दूँगा।"

"क्या तुम उसको कोई वर दे सकते हो, जो देवताओं तक के वरों को अस्वीकार कर सकता है?" काल ने ईक्ष्वाकू से पूछा।

"सच है, मैं उतना समर्थ नहीं हूँ। तुम समर्थ हो। इसलिए तुम ही मुझे वर दो।" ईक्ष्वाकू ने कहा।

"तो माँगो, तुम क्या वर चाहते हो?" काल ने कहा। ईक्ष्वाकू एक उलझन में पड़ गया, क्योंकि वह क्षत्रिय था और उसे ब्राह्मण को दान देना चाहिए था, पर वह ब्राह्मण से कैसे दान ले?

दो ब्राह्मण किसी विषय पर वाद विवाद करते हुए आये और उन्होंने राजा से फैसला देने के लिए कहा। "राजा, मैंने इस ब्राह्मण से दक्षिणा के साथ एक गौ दान में ली। जब मैं उसी गौ को दान में इसे देना चाहता हूँ, तो यह ब्राह्मण लेने से इनकार कर रहा है। यह भी क्या न्याय है?" पहिले ब्राह्मण ने कहा।

"मैंने कभी दान नहीं लिया है और मुझे गौ की जरूरत भी नहीं है। और यह जबर्दस्ती है" दूसरे ब्राह्मण ने कहा।

ईक्ष्वाकू ने न्याय दूसरे ब्राह्मण के पक्ष में दिया। तुरत इन्द्र ने ईक्ष्वाकू से कहा—"तुमने इस ब्राह्मण से वर माँगा और जब वह देने को तैयार है, तो तुम लेना नहीं चाहते। यह भी क्या न्याय है?"

ईक्ष्वाकू इस पर कुछ न कह पाया। उसने काल से विवश हो कहा—"आप अपने तप:फल में मुझे आधा दीजिये।" काल इसके लिए मान गया। इस तरह प्राप्त तपश्शक्ति से ईक्ष्वाकू सब लोकों में संचार करने लगा।

भगवान की परीक्षा

एक गाँव में एक बड़ा भक्त रहा करता था। वह गाँव गाँव फिरता और भगवान की महिमा के बारे में उपदेश दिया करता। एक दिन उस भक्त ने रामपुर नाम के गाँव में कहा—"भगवान जिस किसी प्राणी को पैदा करता है, उसके लिए उसकी खाद्य सामग्री तैयार रखता है। बच्चा पैदा होता है कि उसके लिए माँ का दूध तैयार रहता है। हर प्राणी को किसी न किसी तरह वह भोजन देता है। अगर कोई खाने से मना भी करे, तो उसे जबर्दस्ती खिलाता है।"

वह इस प्रकार प्रवचन कर रहा था और लोग उसे बड़े चाव से सुन रहे थे। उनमें सुखराम भी एक था, जिसको ये बातें बिल्कुल नहीं जँच रही थीं। उसने उठकर भक्त से पूछा—"आप बड़ी विचित्र बात कह रहे हैं। जो खाने से इनकार कर दे, उसे भगवान कैसे खाना खिलाते हैं?"

"भगवान के लिए यह भी कौन-सा बड़ा काम है?" भक्त ने कहा।

सुखराम बड़ा जिद्दी था। उसने उस दिन से, खाना छोड़ देना चाहा। वह जानना चाहता था कि देखें, भगवान उससे कैसे खाना खिलवाते हैं। घर जाते ही, उसकी पत्नी ने उसे भोजन के लिए बुलाया।

"मुझे भूख नहीं है। मैं भोजन नहीं करूँगा।" सुखराम ने कहा।

"मैंने करेले का शाक बनाया है, आपको वह बहुत पसन्द है न? अगर ज्यादह भूख नहीं है, तो थोड़ा ही खाइये न?" पत्नी ने कहा।

एम. मुमताज़ बेगम

"मैं तुमसे ही तो कह रहा हूँ कि खाने की मर्ज़ी नहीं है।" सुखराम ने पत्नी से खिझकर कहा। बच्चे जब खाने लगे, तो उन्होंने जबर्दस्ती सुखराम के मुख में भी कौर रखने की कोशिश की। यह सोच यदि वह घर में रहा, तो लोग उसे बिना खाये नहीं रहने देंगे, वह घर छोड़कर चला गया और गाँव के बाहर, एक चरागाह में, एक पेड़ के नीचे बैठ गया।

उसी गाँव में किसी के बहू को भूत ने पकड़ लिया था। भूत वैद्य ने आकर मन्त्र पढ़े। नज़र उतारी गई....खाना वाना चढ़ाया गया और उसे चरागाह के पास के बढ़ के पेड़ के नीचे रख आने के लिए कहा गया। नौकरों ने उन पकवानों को लाकर, सुखराम, जिस पेड़ के नीचे बैठा था, उसके पास के बढ़ के पेड़ के नीचे रख दिया।

सुखराम को जबर्दस्त भूख लग रही थी। पकवानों की सुगन्ध के कारण, उसके मुख में पानी आ रहा था। फिर भी भगवान की परीक्षा लेने के लिए वह अपनी जीभ पर काबू किये रखा।

रात काफ़ी गुज़र चुकी थी। आधी रात के बाद कुछ चोर, पास के गाँव से, जो कुछ वे चोरी कर लाये थे, उसे आपस में बाँट लेने के लिए वहाँ आये। उन्हें भी अच्छे खाने की सुगन्ध आयी।

"यहाँ यह भोजन, पकवान कैसे आये?" कुछ चोरों ने पूछा।

"जैसे भी आये हों, आओ पेट भर खालें।" कुछ और ने कहा।

"अरे, शायद इसमें जहर मिला हुआ है। कोई हमें यह खिलाकर मारने की कोशिश कर रहा है। यह करनेवाला पास में ही होगा....खोजो।" कुछ और चोरों ने कहा।

उन्होंने जल्दी ही, पास के एक पेड़ के नीचे सुखराम को चुपचाप बैठा देखा।

चोरों ने आकर, सुखराम को घेर लिया। "घुन्ना कहीं का, हमें जहर खिलाकर, मारकर हमारा धन हड़पने के लिए यहाँ छुपे बैठे हो? तुम ही खाओ, यह अपना जहरवाला भोजन।"

"मुझे कुछ नहीं मालूम। मैं नहीं खाऊँगा।" सुखराम ने कहा।

जब सुखराम ने खाने से इनकार कर दिया, तो चोरों का सन्देह और भी पक्का हो गया। उन्होंने सुखराम को खूब पीटा और जबर्दस्ती उसके मुख में भोजन रखा। उन्हें सुखराम खा गया, जब चोरों ने देखा कि सुखराम भोजन खाकर नहीं मर रहा था, तो वे खुद उसे खाने लगे और खा पीकर चम्पत हो गये।

यह सोच कि आखिर भगवान की ही जीत हुई, सुखराम उस अन्धेरे में ही घर पहुँचा।

नारियल का चोर

एक गाँव में रामलाल नाम के जमीन्दार ने नाहर को चार रुपये के वेतन पर माली का काम दिया। उसने उससे बाग लगवाया। उसमें केले के पेड़, आम के पेड़, नारियल के पेड़ लगवाये।

पेड़ बड़े हुए। नाहर ने रामलाल से अपना वेतन बढ़ाने के लिए कहा।

"अरे अभी ही। जल्दी न करो, नारियल के पेड़ पर नारियल तो लगने दो। तब देख लेंगे।" रामलाल ने कहा।

नारियल के पेड़ पर भी फल लगे। नाहर ने ज़िद पकड़ी कि कम से कम उसका वेतन दो रुपया तो बढ़ाया ही जाये।

"अरे जा भी, अभी काम ही क्या है बाग में? एक दमड़ी भी नहीं बढ़ाऊँगा तुम्हारा वेतन। चाहो तो रहो, नहीं तो चले जाओ।

नाहर अच्छी दुविधा में पड़ा। जो कुछ बाग में करना था, वह पहिले ही उसने कर दिया था। यह सोचकर ही जमीन्दार निश्चिन्त था। तब तक नाहर जी तोड़ मेहनत करता आया था, अब उसने चोरी करने की ठानी।

वह हर रात दो दो नारियल बाग से चुरा ले जाता। तीन दिन बाद, जमीन्दार जान गया कि नारियलों की चोरी हो रही थी, पर वह यह न जान सका कि चोर कौन था। उसने नाहर से पूछा। उसने कहा कि वह भी चोर कौन था, यह न जानता था।

"खैर, तुम रात को बाग में पहरा दो और चोर को पकड़ो।" मालिक ने कहा।

निरूपण

"दो रुपये मेरा वेतन बढ़ाइये। मैं रात को पहरा भी दूँगा और चोर पकड़ लूँगा।" नाहर ने कहा।

"नहीं, नहीं, यह नहीं होगा। मैं खुद पहरा दे लूँगा।" जमीन्दार ने कहा। और वह गाँव के देवी के मन्दिर में गया। "देवी, अगर आज तुमने चोर दिखा दिया तो कल मैं तुम पर बकरी चढ़वाऊँगा।"

नाहर भी देवी के सामने हाथ जोड़ने वहाँ आया हुआ था। उसने जमीन्दार की यह बात सुनी। मालिक के जाने के बाद नाहर ने देवी से प्राथना की "देवी, यदि तुमने मुझे मालिक के हाथ न पड़ने दिया तो कल मैं तुम पर एक मुरगा चढ़ाऊँगा। इससे अधिक मेरी शक्ति नहीं है।" उसने यह कहकर हाथ जोड़े।

उस दिन आधी रात को नाहर बाग में गया। कुँए के पास के नारियल के पेड़ पर वह चढ़ा। उसने एक नारियल तोड़कर दूर फेंक दिया। अगर मालिक कहीं बाग में ही चोर की ताक में बैठा था, तो जहाँ नारियल गिरा था, वहाँ ही चोर को देखेगा। उसने यह सोच ही ऐसा किया था।

पर, रामलाल ने इससे पहिले ही किसी को पेड़ पर चढ़ते देख लिया था। वह डंडा और रस्सी लेकर पेड़ के नीचे आ गया था। "कौन है पेड़ पर? चोर कहीं का? मेरी आँखों में ही मिट्टी झोंक रहे हो? नीचे उतरो तुम्हें पेड़ से बाँधकर, तुम्हारी चमड़ी उखड़वा दूँगा।"

नाहर डर से काँप उठा और पेड़ से ही चिपका रहा। इतने में रामलाल ने देखा कि उसी पेड़ पर से कोई कुँये में जा कूदा था। तुरत वह कुँये में कूदकर चोर की तलाश करने लगा। किसी का सिर तो उसके हाथ में आया, पर वह उसे पकड़ न सका।

कुछ देर बाद, उस कुँये में कूदनेवाले ने रामलाल को एक लात मारी और झट कुँये से निकला और नौ दो ग्यारह हो गया। चोर की चतुरता देखकर उसे आश्चर्य हुआ।

अगले दिन फिर रामलाल गाँव के मन्दिर में गया। "देवी, तुमने मुझे धोखा दिया है। चोर निकल भागा। मैं तुम्हें कुछ न दूँगा।" उसने कहा।

"तुमने मुझे चोर दिखाने के लिए कहा था, मैंने दिखा दिया। तुम इतने कंजूस हो कि अपने नौकर के वेतन में दो रुपये तक नहीं दे सकते, मुझे क्या बकरी देते? अगर तुम नाहर का वेतन बढ़ा देते, तो तुम पर यह मुसीबत नहीं न आती।" देवी ने पुजारी को मूर्छित करके, उससे ये बातें कहल्वाईं।

रामलाल की आँखें खुलीं। उसने उस दिन ही नाहर का वेतन बढ़ा दिया, इसके बाद बाग में नारियल की चोरी नहीं हुई।

उस दिन रात को अक्रूर ने बलराम और कृष्ण के साथ भरपूर भोजन किया। वे सब जब एक ही जगह लेटे हुए थे, तो उसने कहा—"बेटा, माँ के गर्भ से निकलते ही तुमने नाना कष्ट झेले। बड़े बड़े कार्य किये। अब इस प्रकार का जीवन काफी हो गया। अब तुम अपने वंश के लिए कुछ कीर्ति प्रतिष्ठा कमाओ। तुम्हारे पिता वसुदेव बहुत बड़े आदमी हैं, तुम दोनों लड़कों के होते हुए भी वह कंस से बड़े डरते हैं। उस दुष्ट से अपमानित हो रहे हैं। वे इस दुख में कराह रहे हैं कि उन्हें तुम्हें जंगलों में भेजना पड़ा। उनकी रक्षा करना तुम्हारा कर्तव्य है। तुम्हारी माँ देवकी के दुख का तो कोई ठिकाना ही नहीं है। जो कोई उसके गर्भ से पैदा हुआ, कंस उनको लगातार मारता गया। उसने इतने बच्चों को जन्म दिया पर उसने एक भी लड़के को दूध न दिया। तुम इतने सुन्दर हो। पर क्या यह तुम्हारी माँ जानती है? उसके मातृत्व को सफल बनाने का भार तुम पर है। तुम्हारे जैसे लड़के के होते अगर वह इतने कष्ट उठा रही है, तो इससे अच्छी मौत ही है।"

१०. बलराम कृष्ण का मथुरा गमन

राक्षस ने हम पर हमला किया, तो हमारी कौन रक्षा करेगा? जो हमारे लोग कृष्ण को यूँ जाने दे रहे हैं, क्या वे पगले नहीं हैं? जब वह तेजी से जाने लगे, तो वे रुक गईं और घर वापिस चली गईं।

दुपहर तक रथ चलता रहा। फिर वे एक कालिन्दी के किनारे कदम्ब वृक्ष की छाया में रुके। अक्रूर ने बलराम कृष्ण से कहा—"मैं नदी में स्नान करके, तर्पण करके, अभी आता हूँ। तब तक तुम रथ में रहो। इस बीच घोड़े भी कुछ घास खा लेंगे।" कहकर वह नदी में गया। फिर उसने डुबकी लगाई।

तब अक्रूर को पानी में पाताल दिखाई दिया। वहाँ वासुकी, कर्कोटक आदि श्रेष्ठ नाग दिखाई दिये। बहुत ही सुन्दर रत्न मन्डप में हजार सिरोंवाला आदिशेष दिखाई दिया। उसका शरीर साफ था। सफेद था। सिमटा बैठा था। फण उठे हुए थे। उसकी जीभें बिजलियों की तरह चमक रही थीं। उसके अगल बगल में ओखल, हल, ताड़ के पेड़ के चिन्होंवाले झण्डे थे और उस आदिशेष पर काला, कमलों की तरह नयनोंवाला कृष्ण पीले कपड़े पहिने बैठा दिखाई दिया।

कृष्ण उसकी बातों का सारांश समझ गया। मथुरा नगर जाकर, कंस को मारकर, अपने माँ बाप देवकी और वसुदेव को अवश्य सुख पहुँचाना चाहता था।

सवेरा हुआ। बलराम और कृष्ण नित्यकृत्य से निवृत्त होकर रथ पर सवार हुए। अक्रूर भी रथ चलाता मथुरा की ओर निकल पड़ा। कुछ गोपिकायें रथ के साथ साथ कुछ दूर गईं। कृष्ण का चला जाना उन्हें बिल्कुल न जंचा। कई ने अक्रूर को खूब बुरा भला कहा। कई और ने कहा—"अगर कल ही किसी
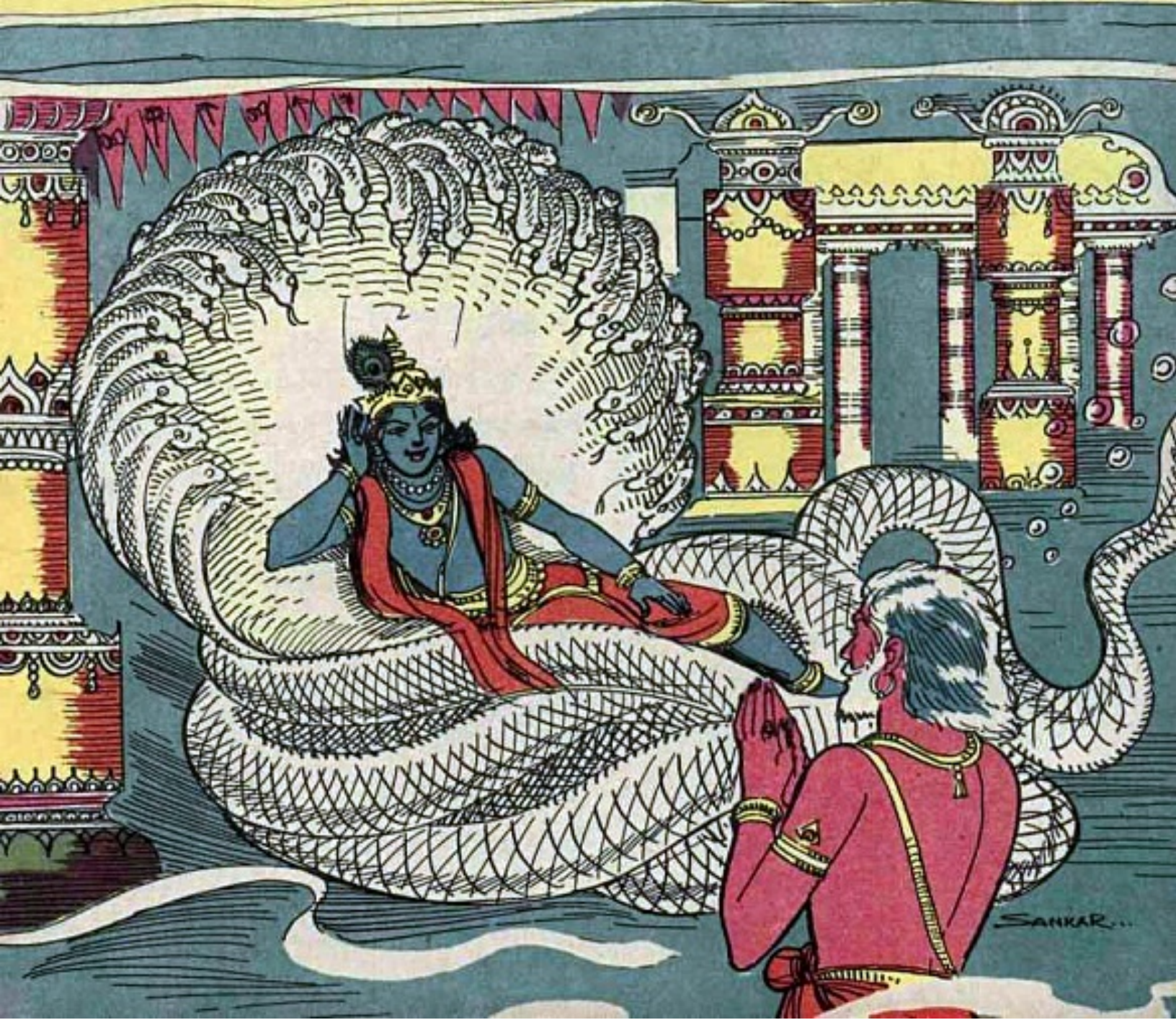
इस तरह दीखे कृष्ण की अक्रूर ने मन्त्रों से आराधना की। विविध अर्चना सामग्री से उसकी अर्चना की। फिर जब वह पानी से उठा, तो उसने रथ में बैठे बलराम और कृष्ण के देहों पर अपनी अर्चना सामग्री के चिन्ह देखे। अक्रूर यह देख और भी चकित हुआ। फिर उसने पानी में डुबकी लगाई। फिर उसने आदिशेष पर कृष्ण को बैठे देखा।

जब अक्रूर अपना अनुष्टान पूरा करके रथ के पास आया, तो कृष्ण ने कहा—"अक्रूर, तुमने बहुत देरी कर दी है। पाताल में शायद कोई आश्चर्य दिखाई दिया है? तुम्हारे मुँह को देखकर तो ऐसा ही लगता है।"

"भगवान, तुम्हारे पास होने के अतिरिक्त और कौन-सा आश्चर्य हो सकता है? तुम और तुम्हारा भाई जैसे यहाँ दिखाई दे रहे हो, वैसे पानी में भी दिखाई दिये। तुम्हारे वास्तविक रूप का वर्णन ब्रह्मा भी नहीं कर सकता। फिर मेरी क्या औकात है? मुझ पर प्रेम करके अनुग्रह करो। चलो अब चलें। कंस तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा होगा। सूर्यास्त होने से पहिले पहुँचना है।" अक्रूर ने कहा।

रथ फिर चल पड़ा। सायंकाल के समय मथुरा नगर पहुँचा। कृष्ण ने हँसकर अक्रूर से कहा—"हमने कभी नगर नहीं देखा है, कंस को देखने तक हम सब्र नहीं कर सकते। इसलिए आओ, चारों ओर घूम आयें। अनुमति दो।"

अक्रूर ने उन्हें रथ से उतारकर कहा—"शायद तुम वसुदेव के घर जाना चाहो। पर वैसा न करना। यदि तुम बिना कंस को पहिले दिखाई दिये

उनको दिखाई दिये, तो कंस बड़ा नाराज होगा।" उनसे यह कहकर वह कंस के पास तेजी से यह कहने चला गया कि वह बलराम और कृष्ण को ले आया था।

बलराम और कृष्ण मथुरा नगर की वीथियों में नगर के आश्चर्यों को देखते आगे चल पड़े। जब वे इस प्रकार जा रहे थे, तो नगरवासी उनको देखकर तरह तरह ही बातें करने लगे।

कुछ दूर जाने के बाद बलराम और कृष्ण को रंगकार नाम का धोबी दिखाई दिया। वह तरह तरह के कपड़े तह लगाकर, गट्ठर बनाकर ले जा रहा था।

"क्यों धोबी? हम राजा को देखने जा रहे हैं। राजमहल में जानेवालों को अच्छे अच्छे कपड़े पहिनकर जाना चाहिए न? तुम इन कपड़ों में से किसी अच्छे आदमी के अच्छे कपड़े दो।" कृष्ण ने कहा।

यह सुन धोबी को बड़ा गुस्सा आया। उसने कहा—"जंगलों में पशुओं के बीच रहनेवालों को कंस महाराजा के कपड़ों की जरूरत आ पड़ी है? जानते हो, ये कपड़े कैसे हैं? दूर दूर के राजाओं ने इन्हें कंस महाराजा के पास उपहार में

भेजे हैं। खरीदना भी चाहो, तो नहीं खरीद सकते, जाओ।"

कृष्ण को गुस्सा आ गया। उसने अपनी तलवार निकालकर, धोबी के गले पर मारी। वह नीचे गिरकर ठंडा हो गया। उसकी बहुत-सी पत्नियाँ थीं। वे भागी भागी आईं उन्होंने इसकी खबर राज नगर में और सब को दी।

कृष्ण ने कपड़ों का गट्ठर खोला। उनमें से पीले रंग के कपड़े उसने ले लिये, नीले रंग के कपड़े बलराम को दे दिये। बाकी में से उसने कुछ को वहाँ खड़े

लोगों को देते हुए कहा—"घबराओ मत। पहिन लो।" बाकी को उसने जला दिये। उस धोबी के घर को भी खाक कर दिया। और आगे आगे चलते गये।

वहाँ उनको गणक नाम का मालायें बनानेवाला दिखाई दिया। कृष्ण ने उससे बढ़िया फूल माँगे। उसने बलराम और कृष्ण को देखकर सोचा कि शायद वे कोई सिद्ध थे, या यक्ष थे। उसने उनको नमस्कार करके कहा—"ले लो, ये सब फूल तुम्हारे ही हैं।" कहकर उसने अच्छे अच्छे फूल चुनकर दिये। फूल मालाओं को जब उन्होंने सिर पर, गले पर डाला, तो वे बड़े विचित्र से लगे।

राजमार्ग से जाते जाते उनको एक कुबड़ी दिखाई दी। उसके हाथ में एक पात्र था, जिसमें से सुन्दर गन्ध आ रही थी। कृष्ण ने उसके पास आकर कहा, उसके मुँह-का परदा हटाकर उसको देखकर कृष्ण ने पूछा—"यह सुगन्धित द्रव्य किसके लिए ले जा रहे हो?"

"कंस महाराज स्नान करके इस चन्दन के लिए प्रतीक्षा कर रहे होंगे। अगर कोई और यह चन्दन उनके लिए तैयार करे, तो उनको यह नहीं भाता है। मुझे ही इसे बनाना पड़ता है, तभी वे लगाते हैं। तुम्हें देखकर न मालूम क्यों मुझे यह सब बताने की सूझी। नहीं तो मेरे पास एक घड़ी भी समय नहीं है। यह राजा के स्नान का समय है।"

"हम दूर देश से आये हुए मल हैं। हम तुम्हारे राजा को, राज्य को और धनुष की होनेवाली पूजा को देखकर सन्तोष करने आये हैं। तुमने अपना बड़प्पन तो बखान दिया। पर हम केवल

सुनकर ही कैसे तुम्हारी सराहना करें? अगर तुमने उस पात्र का चन्दन दिया तो हम भी इसे लगाकर, तुम्हारी प्रशंसा करके राजा के दरबार में कुछ बन ठनकर बैठेंगे।" कृष्ण ने कहा।

यह सुनकर वह हँसी, उसने कहा— "ले लो।" उसने अपने पात्र का चन्दन दे दिया। कृष्ण ने कुछ चन्दन बलराम को दिया। फिर जितने चन्दन की उसे जरूरत थी, उसने उसे अपने शरीर पर पोत लिया। जो कुछ बचा, उसने वहाँ खड़े बच्चों को दे दिया। उसने उस कुबड़ी को साधारण स्त्री बना देना चाहा। इसलिए उसने उस कुबड़ी के पैर के अंगूठे को अपने अंगूठे से दबाया और अपने हाथ की एक अंगुली से उसका सिर उठाया। तुरत उसका रूप निखर आया। उसके शरीर के मोड़ सीधे हो गये। उसकी कमर पतली हो गई। पीठ सीधी हो गई। देह लम्बी हो गई। वह अपने को देख फूली न समाई। हँसते हुए कृष्ण को देखकर उसने कहा— "तुम वह महानुभाव हो, जिसने मेरा बड़ा उपकार किया है। हमारे घर आकर हमें धन्य करो। अगर तुमने मुझे छोड़कर जाना चाहा, तो मैं नहीं सुनूँगी।" कृष्ण को अपने हाथ से पकड़कर उसने कहा।

"इस समय मुझे बड़ा काम है। फिर कभी आऊँगा। तुम सोच लो कि तुम मेरी ही हो।" कहकर कृष्ण ने उसके हाथ से अपना हाथ छुड़ा लिया और बलराम के साथ आगे बढ़ गया। न उन्होंने अपने उद्देश्यों को किसी को बताया, न कुछ और ही दिखाया। वे मामूली ग्वालों की तरह चलते चलते कंस के महल के द्वार के पास पहुँचे। वहाँ

बड़ा शोर शराबा हो रहा था। राजाओं के भेजे हुए उपहार, हाथी, घोड़े, रथ और सुन्दर वस्तु हजारों की संख्या में वहाँ उतारे जा रहे थे।

अन्दर आयुधागार था। उसे सोने और बड़ी बड़ी मणियों से सुन्दर बनाया गया था। कई राजा उसे देखने आये थे। असंख्य सैनिक उसकी रक्षा कर रहे थे।

"कंस महाराजा का धनुष क्या यहीं रखा गया है? हम उसे देखने बड़ी दूर से आये हैं। कहाँ है? क्या हम उसे देख सकते हैं?" जब बलराम और कृष्ण ने यूँ नादानी से पूछा, तो सैनिक उनको वहाँ ले गये जहाँ धनुष रखा था। वह बड़ा धनुष था। तक्षक के शरीर की तरह था।

उसे देख कृष्ण ने कहा—"कहा जाता है, इस पर बाण चढ़ाना न देवताओं के लिए सम्भव है, न दानवों के लिए ही। सच क्या है, जरा यह तो देखें।" कहकर उसने धनुष उठाया और धीमे से उसकी प्रत्यन्चा खींची। ऐसा करने से उससे जो ध्वनि निकली उससे सारी दिशायें प्रतिध्वनि हो उठीं। वहाँ खड़े लोग चकित होकर देख रहे थे कि कृष्ण ने उसको फड़ाक से तोड़ दिया। जिसको लेकर बड़ा उत्सव होने जा रहा था, वह टुकड़े टुकड़े हो गया। कृष्ण यूँ लोगों में खिसक गया, जैसे उसे कुछ मालूम ही न हो और आयुधागार से बाहर निकल आया और सैनिक एक से एक बढ़कर कंस के अन्तःपुर में भागे भागे गये और जो कुछ हुआ था, उसे दबी जबान में कंस को बताया।

[१३]

बलदेव और कोपलेवाले एक के पीछे एक करके पंक्ति में चलते गये।

"मुझे तुरत मनुष्यों के झुण्ड में शामिल होना है...." मौवली ने आखिर कहा।

"तब इनका क्या हो?" बड़े भाई ने जाते हुए लोगों की ओर भूखी नज़र से देखते हुए पूछा।

"अन्धेरा होने तक क्या उन्हें गाँव पहुँचने से रोक सकोगे?" मौवली ने पूछा।

"चाहो तो उनको कोल्हू के बैल की तरह एक ही जगह घूमा सकता हूँ?" बड़े भाई ने कहा।

"इसकी तो कोई ज़रूरत नहीं है.... पर जरा गाकर उनको जोश में लाओ, यही काफी है। संगीत के उतने मधुर होने की भी ज़रूरत नहीं है। बघेल और तुम भी उनके साथ रहोगे न? अन्धेरा होने के बाद गाँव के पास मुझे मिलना। वह जगह बड़े भाई को मालूम है।" मौवली ने कहा।

जंगल में से भागते हुए मौवली ने अपने सामने जाते हुए चारों कोयलेवालों को और कन्धे पर बन्दूक डाले चारों ओर देख देखकर जानेवाले बलदेव को भी देखा। उसके पीछे से उसके "मित्रों" ने "गाना" शुरु किया।

कोयलेवाले और बलदेव घबरा गये। वे, लकड़ियाँ और सूखे पत्तों को रौंदते हुए जो पेड़ मिला, उसपर चढ़ गये। बलदेव मन्त्र जपने लगा।

अन्तिम पृष्ठ

मौवली एक एक मील पार करता आगे जा रहा था। मेस्सुवा और उसके पति को बन्धन से छुड़ाने के सिवाय उसके मन में कुछ भी न था।

शाम के झुटपुटे में वह चरागाह के पास पहुँचा। गाँववाले रोज की अपेक्षा पहिले ही खेतों से वापिस आ गये थे। वे रोजमर्रे का काम काज न कर कराकर, पेड़ के नीचे गप्प मार रहे थे।

"इन मनुष्यों को विना मनुष्यों का शिकार किये कुछ नहीं सूझता। कल इन्होंने मेरा शिकार किया था, आज इन्होंने मेस्सुआ और उसके पति को पिंजड़े में रख दिया है। कल मुझे फिर फँसाने की सोच रहे हैं।" मौवली ने सोचा।

वह दीवार के सहारे रेंगता रेंगता मेस्सुवा की झोंपड़ी में पहुँचा। खिड़की में से उसने अन्दर देखा। मेस्सुआ फर्श पर पड़ी थी। उसके हाथ पैर बाँध रखे थे और उसके मुख में कपड़े ठूसे गये थे। वह और कराह रही थी। उसके पति को खाट से बाँध दिया गया था। घर के दरवाजे बन्द थे। उसके बाहर तीन चार आदमी पहरा दे रहे थे।

गाँववालों की आदतें आदि मौवली अच्छी तरह जानता था। हमेशा, या तो खाना, नहीं तो बकना, नहीं तो बैठकर गप्पें मारना, यही उनका काम है। खाना खाने के बाद वे भयंकर हो जाते हैं। कुछ देरी में बलदेव वहाँ आ जायेगा।

मौवली खिड़की में से अन्दर गया। मेस्सुआ और उसके पति के बन्धन खोल दिये। दूध के लिए इधर उधर देखा। अगर वह तुरत मुख न बन्द कर देता तो मेस्सुवा शायद चिल्ला पड़ती। वह तकलीफ़ के कारण कुछ कुछ पगला-सी

गई थी। उस दिन सवेरे गाँववालों ने उसे लाठी से खूब पीटा था। उसका पति गुस्से में था। कुछ कुछ लाचार भी।

"मैं जानती थी कि आओगे। तुम सचमुच मेरे लड़के हो...." कहती, मौवली ने मेस्सुवा को जोर से गले लगा लिया। तब तक मौवली निश्चल-सा था। फिर अपने को यकायक काँपता देख, मौवली को अपने ऊपर अचरज हुआ।

मेस्सुवा ने कुछ भी न कहा। मौवली ने उसके घाव देखे। खून देखकर उसके दान्तों का पीसना, पति-पत्नी दोनों ने देखा।

"यह किसने किया है? इसका बदला लेना ही होगा।" मौवली ने कहा।

"सारे गाँव ने मिलकर किया है। मैं धनी हूँ। मेरे बहुत-से पशु हैं। इसलिए हम तुम्हें आश्रय देकर बुरे हो गये हैं।" मेस्सुवा के पति ने कहा।

"मैं कुछ समझ नहीं पा रहा हूँ। जो कुछ हुआ है....उसे मेस्सुवा को कहने दो।" मौवली ने कहा।

"मैंने तुम्हें दूध दिया था....याद है? वह मेरा लड़का, जिसे शेर पकड़ ले गया था, वह तुम ही हो। मैं तुम पर जान देती हूँ। इसलिए मैं भूत की माँ हूँ और भूत की माँ को मार ही देना चाहिए।" मेस्सुवा ने कहा।

"मृत्यु क्या है....यह तो मैं जानता हूँ। पर भूत किसे कहते हैं?" मौवली ने पूछा।

मेस्सुवा ने हँसकर अपने पति से कहा—"देखा! मैं जानती थी। यह ऐसा वैसा लड़का नहीं है। मेरा ही लड़का है।" उसने कहा।

"लड़का हो, कुछ भी हो, हमें क्या! हमारी गिनती बस अब मुर्दों में ही है।" मेस्सुवा के पति ने कहा।

मौवली ने खिड़की में से दिखाते हुए कहा—"यही जंगल का रास्ता है। तुम्हारे हाथ और पैरों को बन्धन खुल गये हैं....चले जाओ।"

"अरे, जिस प्रकार तुम जंगल को जानते हो, हम नहीं जानते हैं। मैं ज्यादह दूर चल भी नहीं सकती।" मेस्सुवा ने कहा।

"यही नहीं, गाँव की स्त्रियाँ और मर्द सब हम पर टूट पड़ेंगे और हमें वापिस घसीट ले आयेंगे।" उसके पति ने कहा।

मौवली ने अपने चाकू से हथेली पर कुछ खींचते हुए कहा—"मैं किसी का अभी कुछ नहीं बिगाड़ना चाहता। फिर भी देखता हूँ कि तुम्हें कौन रोकता है। यही नहीं, मुझ पर जल्दी और भी बहुत-सा काम आ पड़ेगा।" उसने जो सिर उठाया, तो उसे बाहर शोर सुनाई दिया। "तो हमारे लोगों ने बलदेव को छोड़ दिया है।"

"तुम्हें मारने के लिए सवेरे उसे गाँववालों ने भेजा था। क्या वह तुम्हें दिखाई दिया?" मेस्सुवा ने घबराते हुए पूछा।

"हाँ, दिखाई दिया था। वह सुनाने के लिए एक और अजीब कहानी ले आया होगा। उसकी कथा के खतम होने से पहिले हमें बहुत कुछ करना है। मैं जाकर मालूम करता हूँ कि लोग क्या करने जा रहे हैं। इस बीच तुम तय कर लो कि कहाँ जाना चाहते हो।" कहकर मौवली खिड़की में से कूदा। गाँव की चौहद्दी पर रेंगता हुआ पेड़ के पास पहुँचा और लोग क्या कह सुन रहे थे, वह सुनने लगा। (अभी है)

६७. सुन्दर ग्रीक शिल्प

ईसा से चार सौ वर्ष पहिले की इस समाधि पर ये सुन्दर प्रतिमायें गढ़ी गई हैं। इसमें शृंगार करती स्त्री और उसकी परिचारिका है। ग्रीक शिल्प में वस्त्रों का प्रदर्शन एक विशेष तरीके से होता है। यह ही इसी में दिखाया गया है।

Photo by Pranlal Patel

पुरस्कृत परिचयोक्ति

इस तरह चिढ़ाते हैं!

प्रेषक :
मुरलीधर गोखले - नागपुर

Photo by Prabhakar Mahadik

पुरस्कृत
परिचयोक्ति

फिर भी प्यार पाते हैं!!

प्रेषक :
मुरलीधर गोखले - नागपूर

फ़ोटो - परिचयोक्ति - प्रतियोगिता

सितम्बर १९६७ :: पारितोषिक १०)

कृपया परिचयोक्तियाँ कार्ड पर ही भेजें !

ऊपर के फ़ोटो के लिए उपयुक्त परिचयोक्तियाँ चाहिए। परिचयोक्तियाँ दो तीन शब्द की हों और परस्पर संबन्धित हों। परिचयोक्तियाँ पूरे नाम और पते के साथ कार्ड पर ही लिखकर निम्नलिखित पते पर तारीख ७ जुलाई १९६७ के अन्दर भेजनी चाहिए।

फ़ोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता
चन्दामामा प्रकाशन,
वड्पलनी, मद्रास-२६

जुलाई – प्रतियोगिता – फल

जुलाई के फ़ोटो के लिए निम्नलिखित परिचयोक्तियाँ चुनी गई हैं। इनके प्रेषक को १० रुपये का पुरस्कार मिलेगा।

पहिला फ़ोटो : इस तरह चिढ़ाते हैं !

दूसरा फ़ोटो : फिर भी प्यार पाते हैं !!

प्रेषक : श्री मुरलीधर गोखले,

C/o श्री जी. डी. गोखले, ब्लॉक नं. १२३/३ माउंट रोड, सिव्हिल लाइन्स – नागपूर

Printed by B. V. REDDI at The Prasad Process Private Ltd., and Published by B. VISWANATHA REDDI for Sarada Binding Works, 2 & 3, Arcot Road, Madras-26. Controlling Editor: 'CHAKRAPANI'